ओ३म्

महर्षि दयानंद सरस्वती और उनके क्रान्तिकारी शिष्य

लेखक व चित्रांकन
भारत मकवाना

महर्षि दयानन्द सरस्वती और उनके क्रान्तिकारी शिष्य

हमारा देश परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था। भारत के भाग्याकाश पर अविद्या और अंधकार की घटायें छाईहुई थीं। देश के अन्दर धर्म के पुजारियों ने धर्म के रूप को विकृत कर दिया था। छूआ- छूत, अशिक्षा और गरीबी का बोलबाला था। दूसरी ओर अंग्रेज हमारी प्राचीन भारतीय सभ्यता को पूरी तरह समाप्त करने के लिए तैयार थे। ऐसे में देश को जरूरत थी एक पथप्रद - र्शक की, जिसमें हमारे प्राचीन ऋषियों, महापुरुषों जैसे समस्त गुण हों। जिसमें हनुमान् और भीष्म पितामह जैसे ब्रह्मचारी हों।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ऐसे ही शुभ गुणों से सुभूषित महामानव थे। उनका जन्म सम्वत्- 1818 में फागुन वदी दशमी तिथि को, तदनुसार - 12 फरवरी सन् 1825 को गुजरात के मोरवी प्रान्त के गाँव टंकारा में श्री कर्षन जी तिवारी 'औदीच्य ब्राह्मण' के घर हुआ था। उनका बचपन का नाम मूलशंकर था।

बालक मूलशंकर कुछ बड़ा हुआ तो पिता ने उसकी घर पर ही शिक्षा देने की व्यवस्था कर दी। तीन वर्ष की आयु में ही इस मेधावी बालक ने गायत्री मंत्र को कंठस्थ कर लिया था। मूलशंकर की स्मृति विलक्षण थी... वह एक बार जिस पाठ को याद कर लेता फिर कभी नहीं भूलता था।

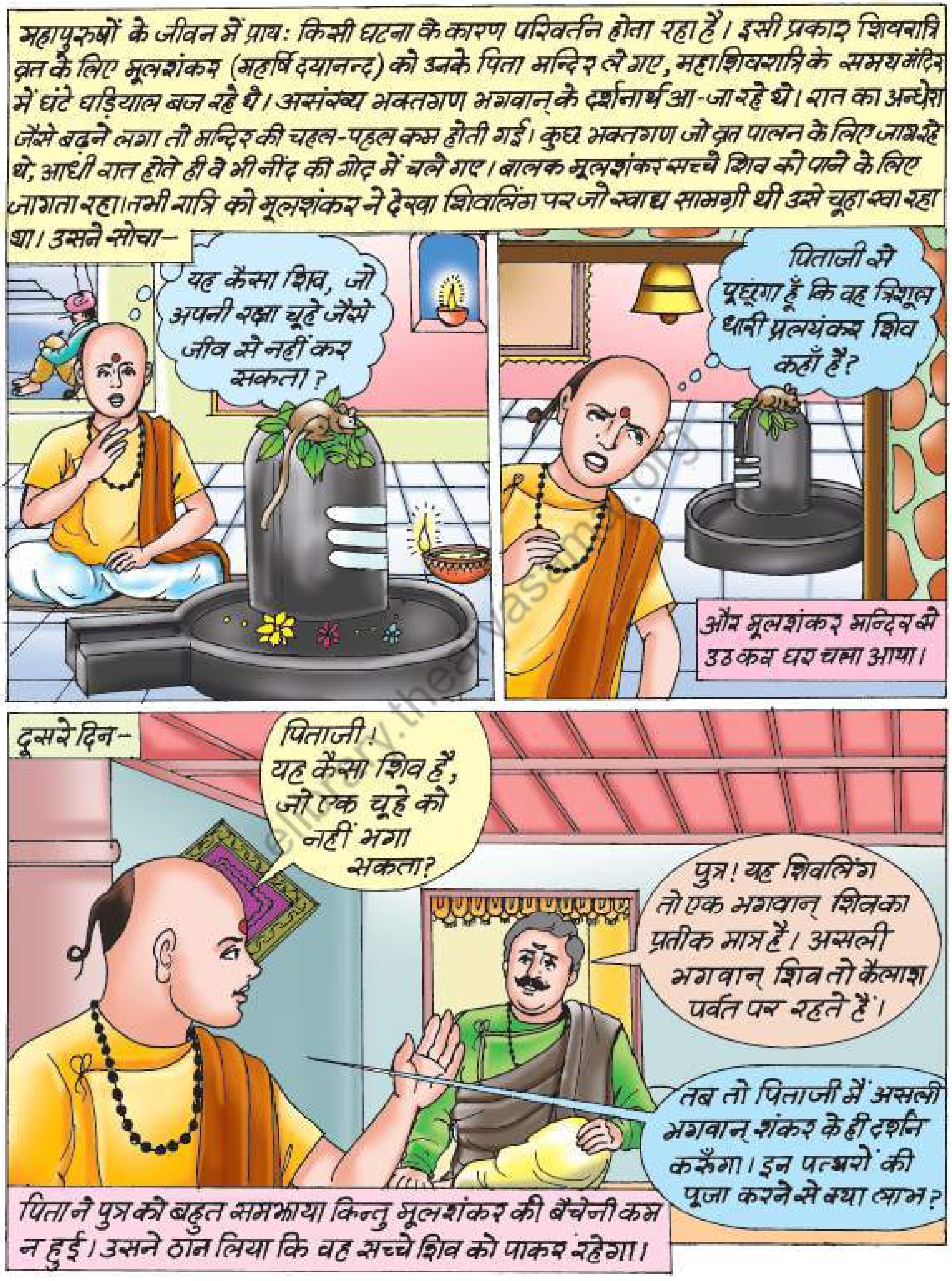
महापुरुषों के जीवन में प्राय: किसी घटना के कारण परिवर्तन होता रहा है। इसी प्रकार शिवरात्रि व्रत के लिए मूलशंकर (महर्षि दयानन्द) को उनके पिता मन्दिर ले गए, महाशिवरात्रि के समय मंदिर में घंटे घड़ियाल बज रहे थे। असंख्य भक्तगण भगवान् के दर्शनार्थ आ-जा रहे थे। रात का अन्धेरा जैसे बढ़ने लगा तो मन्दिर की चहल-पहल कम होती गई। कुछ भक्तगण जो व्रत पालन के लिए जाग रहे थे, आधी रात होते ही वे भी नींद की गोद में चले गए। बालक मूलशंकर सच्चे शिव को पाने के लिए जागता रहा। तभी रात्रि को मूलशंकर ने देखा शिवलिंग पर जो खाद्य सामग्री थी उसे चूहा खा रहा था। उसने सोचा–
यह कैसा शिव, जो अपनी रक्षा चूहे जैसे जीव से नहीं कर सकता?
पिताजी से पूछूंगा हूँ कि वह त्रिशूल धारी प्रलयंकर शिव कहाँ है?
और मूलशंकर मन्दिर से उठकर घर चला आया।
दूसरे दिन–
पिताजी! यह कैसा शिव है, जो एक चूहे को नहीं भगा सकता?
पुत्र! यह शिवलिंग तो एक भगवान् शिव का प्रतीक मात्र है। असली भगवान् शिव तो कैलाश पर्वत पर रहते हैं।
तब तो पिताजी मैं असली भगवान् शंकर के ही दर्शन करूँगा। इन पत्थरों की पूजा करने से क्या लाभ?
पिता ने पुत्र को बहुत समझाया किन्तु मूलशंकर की बैचेनी कम न हुई। उसने ठान लिया कि वह सच्चे शिव को पाकर रहेगा।

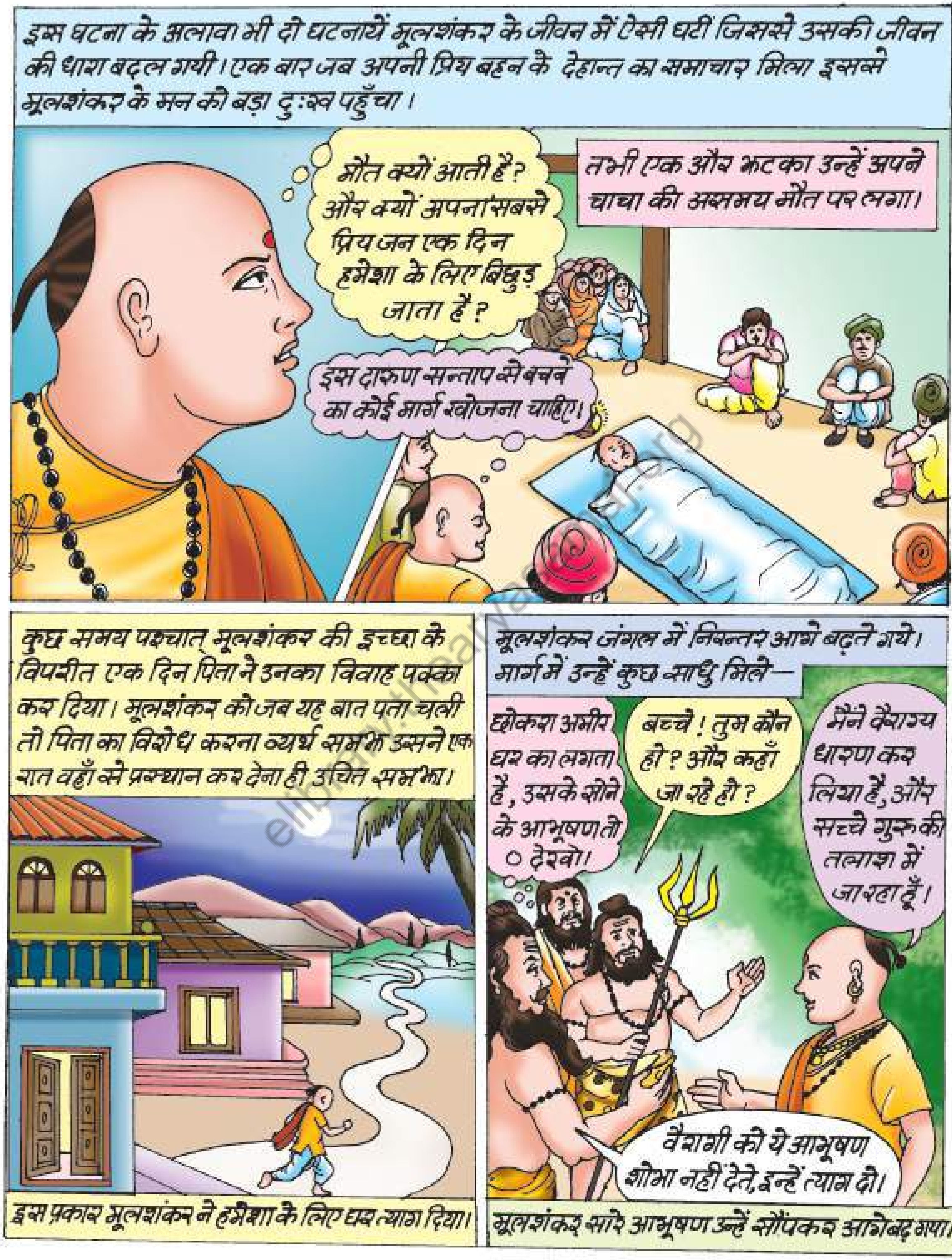
इस घटना के अलावा भी दो घटनायें मूलशंकर के जीवन में ऐसी घटीं जिससे उसकी जीवन की धारा बदल गयी। एक बार जब अपनी प्रिय बहन के देहान्त का समाचार मिला इससे मूलशंकर के मन को बड़ा दुःख पहुँचा।
मौत क्यों आती है? और क्यों अपना सबसे प्रिय जन एक दिन हमेशा के लिए बिछुड़ जाता है?
तभी एक और झटका उन्हें अपने चाचा की असमय मौत पर लगा।
इस दारुण सन्ताप से बचने का कोई मार्ग खोजना चाहिए।
कुछ समय पश्चात् मूलशंकर की इच्छा के विपरीत एक दिन पिता ने उनका विवाह पक्का कर दिया। मूलशंकर को जब यह बात पता चली तो पिता का विरोध करना व्यर्थ समझा उसने एक रात वहाँ से प्रस्थान कर देना ही उचित समझा।
इस प्रकार मूलशंकर ने हमेशा के लिए घर त्याग दिया।
मूलशंकर जंगल में निरन्तर आगे बढ़ते गये। मार्ग में उन्हें कुछ साधु मिले—
छोकरा अमीर घर का लगता है, उसके सोने के आभूषण तो देखो।
बच्चे! तुम कौन हो? और कहाँ जा रहे हो?
मैंने वैराग्य धारण कर लिया है, और सच्चे गुरु की तलाश में जा रहा हूँ।
वैरागी को ये आभूषण शोभा नहीं देते, इन्हें त्याग दो।
मूलशंकर सारे आभूषण उन्हें सौंपकर आगे बढ़ गया।

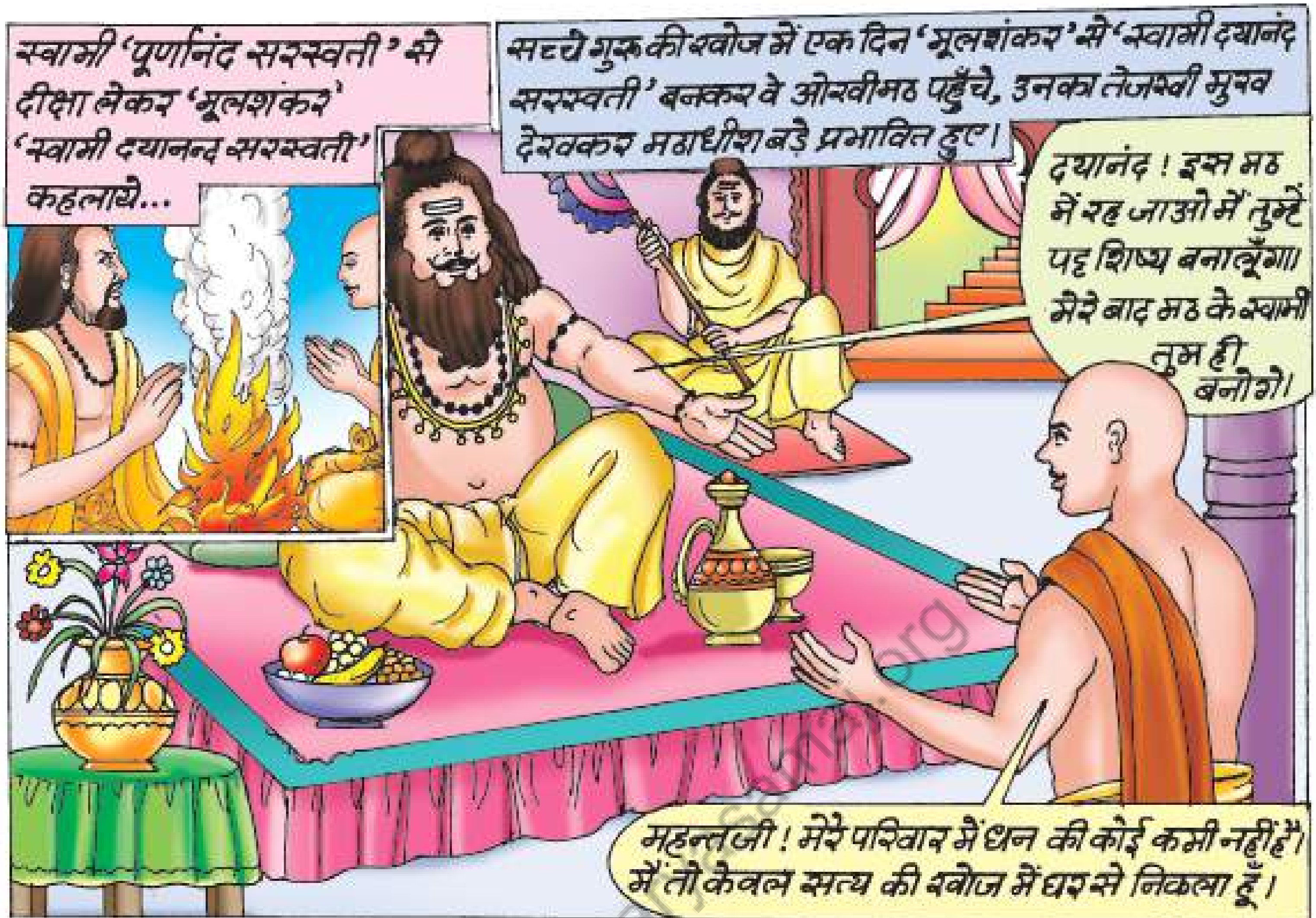

दयानंद ने बिना किसी हिचक के उनको यमुना में फेंक दिया और लगभग 3 वर्ष तक गुरु विरजानंद से व्याकरण पढ़ते रहे।

library.thearyasamaj.org

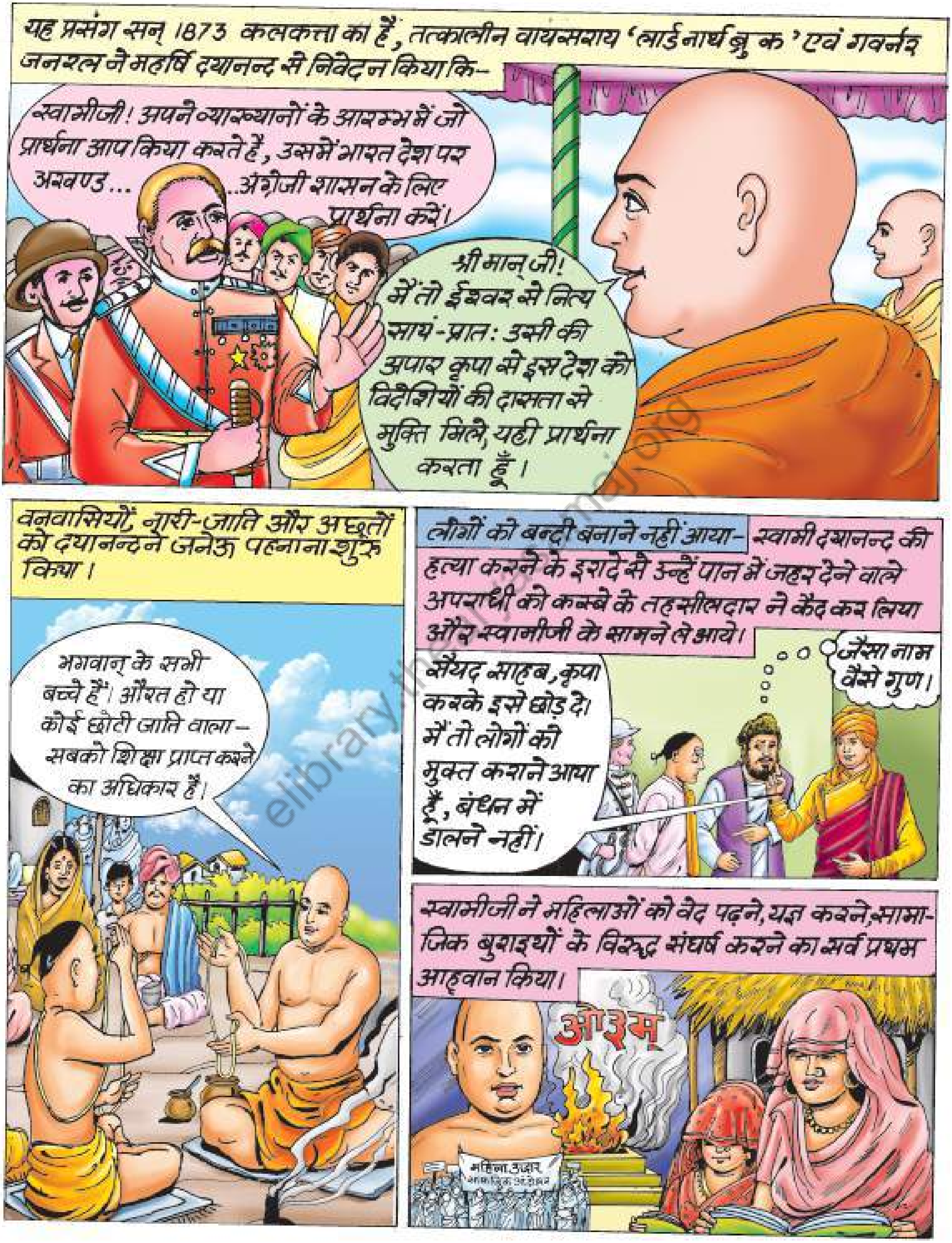

यह प्रसंग सन् 1873 कलकत्ता का हैं, तत्कालीन वायसराय 'लार्ड नार्थब्रुक' एवं गवर्नर जनरल ने महर्षि दयानन्द से निवेदन किया कि–
स्वामीजी! अपने व्याख्यानों के आरम्भ में जो प्रार्थना आप किया करते हैं, उसमें भारत देश पर अखण्ड ... ..अंग्रेजी शासन के लिए प्रार्थना करें।
श्री मान् जी! मैं तो ईश्वर से नित्य सायं-प्रात: उसी की अपार कृपा से इस देश को विदेशियों की दासता से मुक्ति मिले, यही प्रार्थना करता हूँ।
वनवासियों, नारी-जाति और अछूतों को दयानन्द ने जनेऊ पहनाना शुरू किया।
भगवान् के सभी बच्चे हैं। औरत हो या कोई छोटी जाति वाला– सबको शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है।
लोगों को बन्दी बनाने नहीं आया–
स्वामी दयानन्द की हत्या करने के इरादे से उन्हें पान में जहर देने वाले अपराधी को कस्बे के तहसीलदार ने कैद कर लिया और स्वामीजी के सामने ले आये।
सैयद साहब, कृपा करके इसे छोड़ दो। मैं तो लोगों को मुक्त कराने आया हूँ, बंधन में डालने नहीं।
जैसा नाम वैसे गुण।
स्वामीजी ने महिलाओं को वेद पढ़ने, यज्ञ करने, सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध संघर्ष करने का सर्व प्रथम आह्वान किया।
ओ३म
महिला उद्धार

उन्होंने अनेक नौजवानों को विदेशी वस्त्र त्यागने का उपदेश दिया।
स्वामीजी ने श्यामजी कृष्ण वर्मा को लन्दन में संस्कृत पढ़ाने भेजा, जो इण्डिया हाउस में वीर सावरकर, मदन लाल धींगड़ा के गुरु बने तथा एक सेठ से छात्र-वृत्ति भिजवाते रहे।
वीर सावरकर
जय हिन्द
अपने देश की गरीबी के कारण हुई दुर्दशा स्वामी दयानन्द सरस्वती से नहीं देखी गई।
आह! मेरे देश की माँ अपने मरे हुए बच्चे के शरीर से कफन तक उतार रही है। हे ईश्वर! यह कैसी गरीबी?
नहीं, ईश्वर इतना अन्यायी नही हो सकता। सत्य की खोज के अलावा अब मुझे कहीं शांति नहीं मिलेगी।
अंग्रेजों के अत्याचारों व देश में फैली गरीबी से वे खिन्न थे। देश गुलाम था।
आर्यसमाज की स्थापना–
वेद ईश्वर की वाणी है। हमें वेदानुसार जीवन यापन करना चाहिये। श्रीराम, श्री कृष्ण हमारे महापुरुष हैं, वे भगवान् नहीं।
10 अप्रैल सन् 1875 को उन्होंने बम्बई में प्रथम आर्यसमाज की स्थापना की तथा बाद में आर्यसमाज के दस नियम भी बनाए।

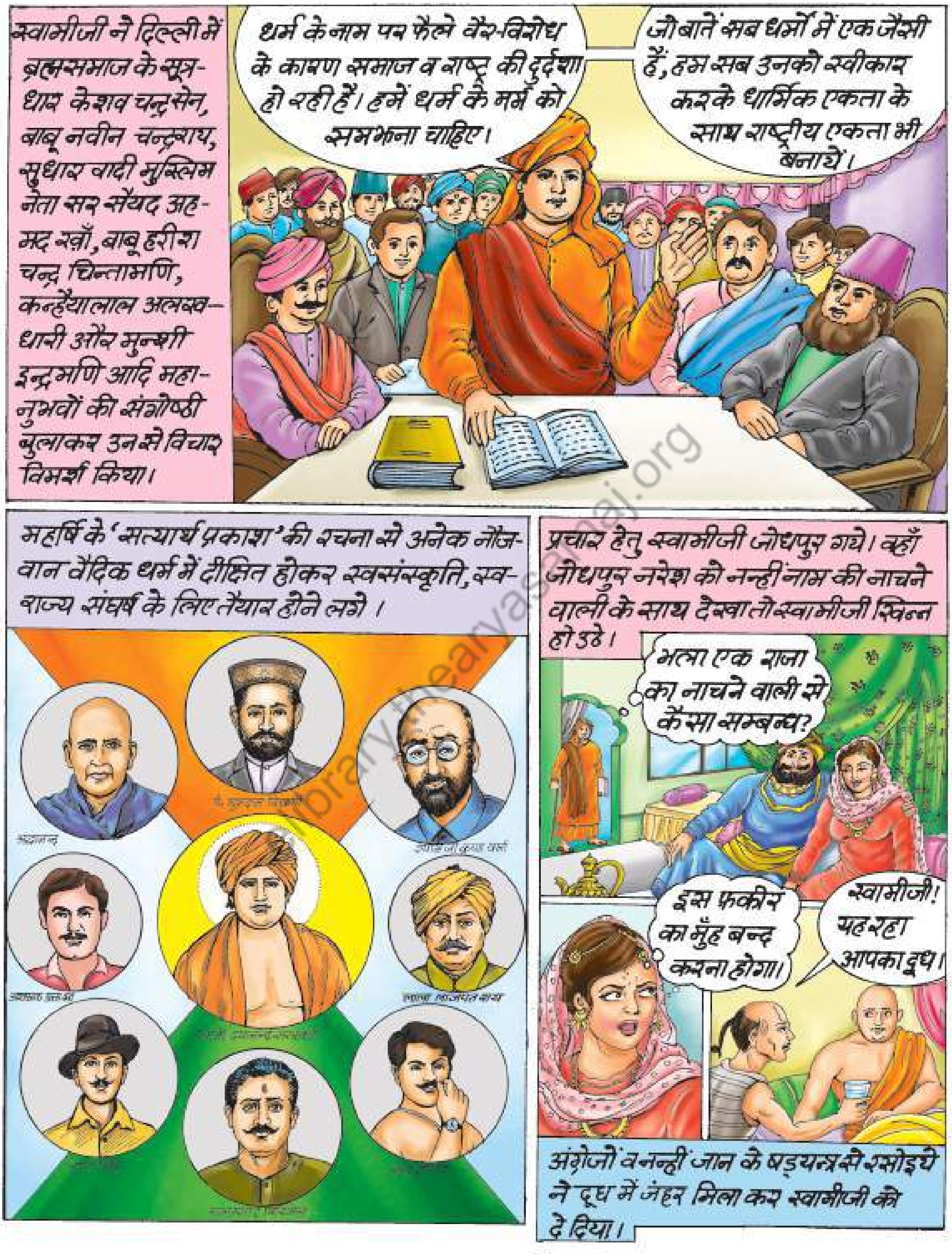

library.thearyasamaj.org

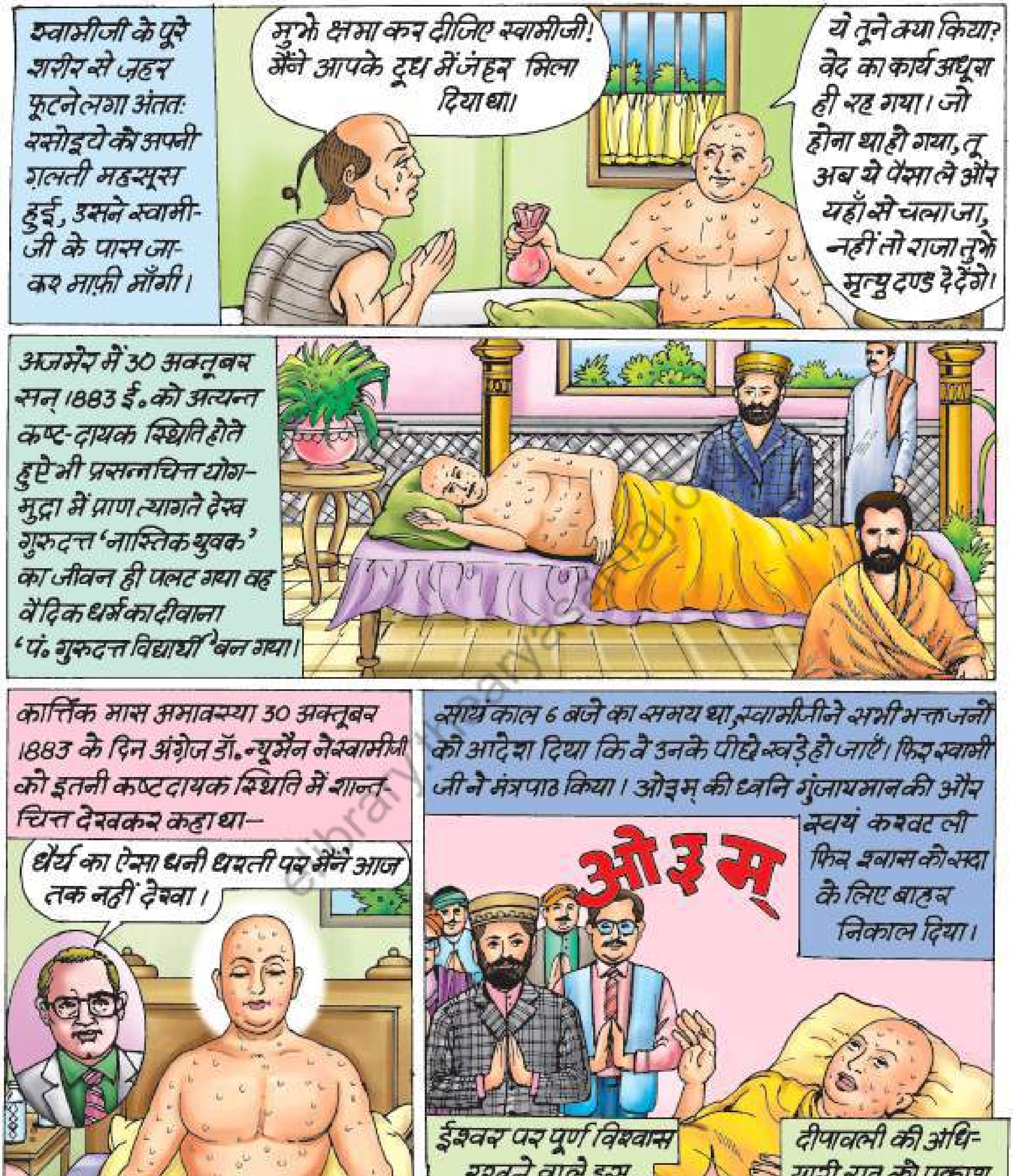
स्वामीजी के पूरे शरीर से जहर फूटने लगा अंततः रसोइये को अपनी ग़लती महसूस हुई, उसने स्वामी-जी के पास जा-कर माफ़ी माँगी।
मुझे क्षमा कर दीजिए स्वामीजी! मैंने आपके दूध में जहर मिला दिया था।
ये तूने क्या किया? वेद का कार्य अधूरा ही रह गया। जो होना था हो गया, तू अब ये पैसा ले और यहाँ से चला जा, नहीं तो राजा तुझे मृत्यु दण्ड दे देंगे।
अजमेर में 30 अक्तूबर सन् 1883 ई॰ को अत्यन्त कष्ट-दायक स्थिति होते हुऐ भी प्रसन्नचित्त योग-मुद्रा में प्राण त्यागते देख गुरुदत्त 'नास्तिक युवक' का जीवन ही पलट गया वह वैदिक धर्म का दीवाना 'पं॰ गुरुदत्त विद्यार्थी' बन गया।
कार्तिक मास अमावस्या 30 अक्तूबर 1883 के दिन अंग्रेज डॉ॰ न्यूमैन ने स्वामीजी को इतनी कष्टदायक स्थिति में शान्त-चित्त देखकर कहा था—
धैर्य का ऐसा धनी धरती पर मैंने आज तक नहीं देखा।
सायंकाल 6 बजे का समय था, स्वामीजी ने सभी भक्तजनों को आदेश दिया कि वे उनके पीछे खड़े हो जाएँ। फिर स्वामीजी ने मंत्रपाठ किया। ओ३म् की ध्वनि गुंजायमान की और स्वयं करवट ली फिर श्वास को सदा के लिए बाहर निकाल दिया।
ओ३म्
ईश्वर पर पूर्ण विश्वास रखने वाले इस महान् संन्यासी ने जीवन के अंतिम शब्द कहे थे—
हे प्रभु! तेरी इच्छा पूर्ण हो।
दीपावली की अँधियारी रात की प्रकाश का चमचमाता सितारा सदा के लिए अस्त हो गया।

पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा
पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा का जन्म गुजरात प्रांत के माण्डवी उपनगर में 4 अक्टूबर, 1857 को हुआ था। इनके परिवार की आर्थिक दशा ठीक नहीं थी, अतः अर्थोपार्जन के लिये बम्बई जाना पड़ा। हाई-स्कूल में सर्वोच्च अंक प्राप्त किये। श्यामजी की प्रतिभा देख, बम्बई के एक धनाढ्य सेठ छबील-दास लल्लू भाई ने उन्हें प्रोत्साहित किया व उन्होंने अपनी लड़की भानुमती का ब्याह 1875 में उनके साथ कर दिया।
इसी वर्ष समाज सुधारक महर्षि दयानन्द का बम्बई में आगमन हुआ।
ओ३म्
वहाँ उन्होंने 10 अप्रैल 1875 को आर्यसमाज की स्थापना की।
महर्षि दयानन्द की विचारधारा का श्यामजी कृष्ण वर्मा पर गहरा प्रभाव पड़ा।
ईश्वर का मुख्य नाम 'ओ३म्' है। वह सच्चिदानन्द स्वरूप है... उसका कोई आकार नहीं है... वह हर जगह मौजूद है। ईश्वर सर्वशक्तिमान है, वह प्रत्येक जीव में मौजूद है।
गुरुदेव
वे महर्षि दयानन्द से प्रभावित हो कर उनके शिष्य बन गये।

श्यामजी कृष्ण वर्मा महाराणा उदयपुर के प्रथम दीवान बने। संस्कृत के धुरन्धर विद्वान् होने के कारण महर्षि दयानन्द ने इन्हें संस्कृत अध्यापन व देश की आजादी के लिये ऑक्सफार्ड यूनिवर्सिटी (इंग्लैंड) भेजा, वहाँ उनके द्वारा स्थापित 'इंडिया हाउस' (लंदन) में भारतीय क्रान्तिकारियों का कैन्द्र बन गया।
इंडिया हाउस
(लंदन)

वहां उन्होंने 'इंडियन होमरूल सोसायटी' का गठन किया। लाला हरदयाल, मैडम कामा, लाला लाजपतराय, मदन लाल दींगरा व गाँधी आदि देश भक्त वहां ठहरा करते थे। वीर सावरकर भी इस सोसायटी के सक्रिय सदस्य बन गये और संस्था के कार्य को बढ़ावा देने लगे। रविवार को सोसायटी की बैठक में क्रान्तिकारी साहित्य पढ़ा जाता व भारत भेजा जाता।
ओ३म्
इंडियन होमरूल सोसायटी
क्रान्तिकारी संगठन
(लंदन) 1905

इंग्लैण्ड जाकर भी श्यामजी कृष्ण वर्मा का स्वामी दयानन्द जी के साथ लगातार पत्र-व्यवहार होता रहा। स्वामी दयानन्द जहाँ श्यामजी का मार्गदर्शन करते वहीं वे इंग्लैण्ड के लोग भारत के बारे में क्या सोचते हैं, यह जानकारी भी श्यामजी से लेते रहते थे।

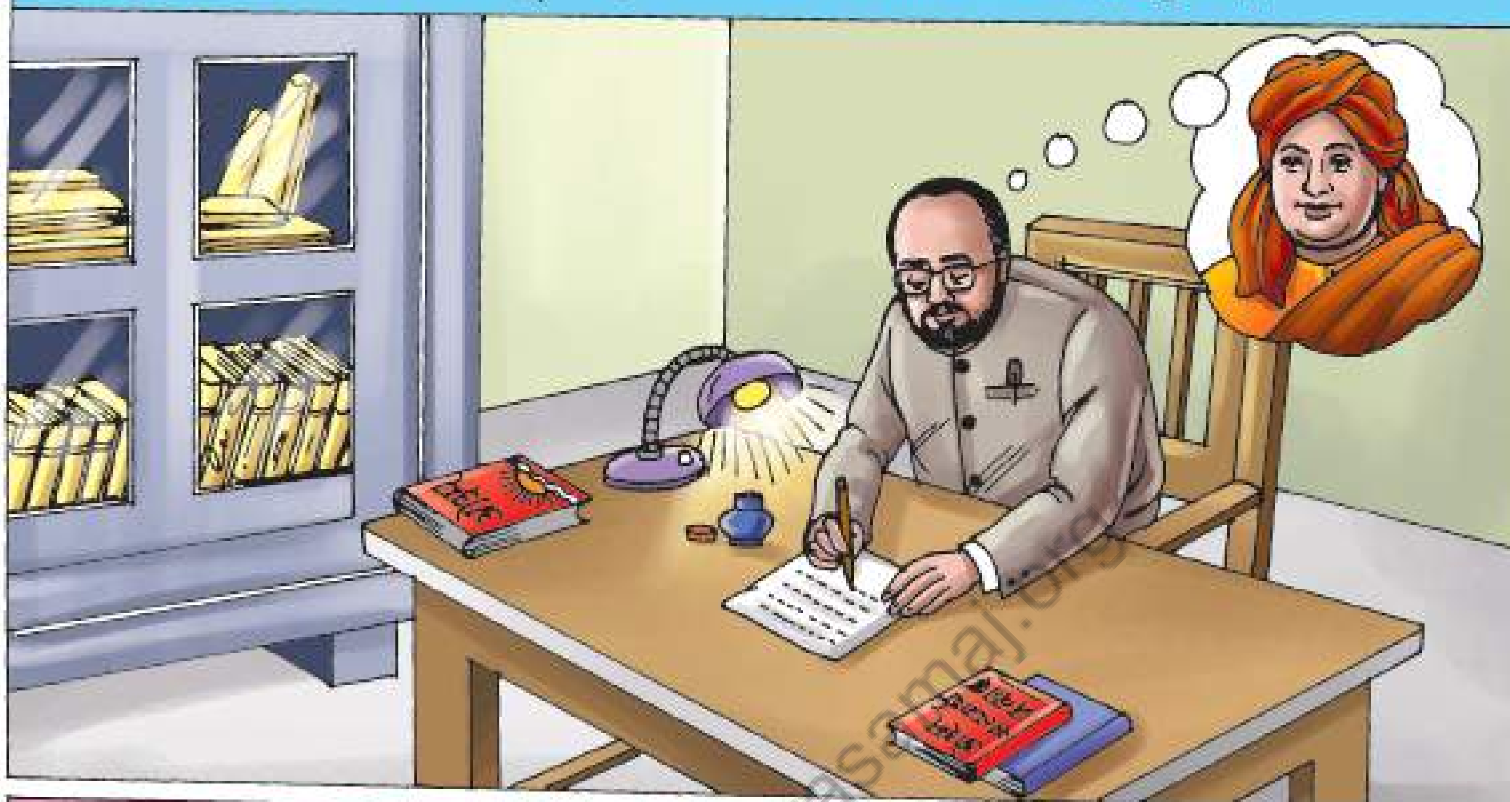

श्यामजी महर्षि का कितना मान करते थे इसका पता इसी बात से चल जाता है कि उन्होंने स्वामी जी के नाम से इंग्लैण्ड में छात्रवृत्ति चला रखी थी।

श्यामजी का संस्कृत भाषा व व्याकरण पर ऐसा अधिकार था कि वे संस्कृत में धारा प्रवाह भाषण देते थे।

सन् 1905 में श्यामजी कृष्ण वर्मा ने 'दि इंडियन सोशियॉलोजिस्ट' नामक एक अंग्रेजी पत्र निकाला जिससे वे लंदन में रहते हुए भी देश-विदेश के क्रान्तिकारियों को प्रेरणा देते रहते थे।
दि इंडियन सोशियॉलोजिस्ट

उनकी पत्नी भानुमती का क्रान्तिकारी कार्यों में पूर्ण रूप से सहयोग रहता था।
इण्डिया हाउस (भारत भवन) पर गुप्तचर विभाग की कड़ी नजर रहा करती थी।

इंग्लैंड से अब क्रान्तिकारी गतिविधियाँ चलाना कठिन होता जा रहा था अतः श्यामजी कृष्ण वर्मा ने फ्रांस की राजधानी पेरिस व स्विट्जरलैंड के 'जिनेवा' नगर को क्रान्तिकारी गतिविधियों का केन्द्र बनाया।
आप आजादी लेने की ठान लेंगे तो वह मिलेगी, कोशिश नहीं करेंगे तो इस मुसीबत से हम कभी नहीं उभर सकते।
क्रान्तिकारी सोसायटी
(जिनेवा)

सन् 1927 में जब पं० जवाहर लाल नेहरू स्विट्ज़रलैण्ड गए तो श्यामजी कृष्ण वर्मा के दर्शनार्थ उनके निवास स्थान पर भी गए। उन्होंने उस महापुरुष को 'वृद्ध सिंह' की उपाधि दी थी।
मैं इस महापुरुष को 'वृद्ध सिंह' की उपाधि देता हूँ।
ओ३म्

प्रथम विश्व युद्ध में भारतीय सैनिकों को उकसाने पर फ्रांस की सरकार ने श्यामजी कृष्ण वर्मा को राजद्रोही घोषित कर दिया। अत: उन्हें गुप्त रूप से स्विट्जरलैंड जाना पड़ा। निरन्तर संघर्ष करते-करते 73 वर्ष की आयु में 31 मार्च सन् 1930 को जिनेवा में भारत माँ का यह सच्चा सपूत इस संसार से सदा-सदा के लिए विदा हो गया।
उनका कथन था –
अत्याचार करने वाले से अत्याचार सहने वाला अधिक दोषी है।
ओ३म्

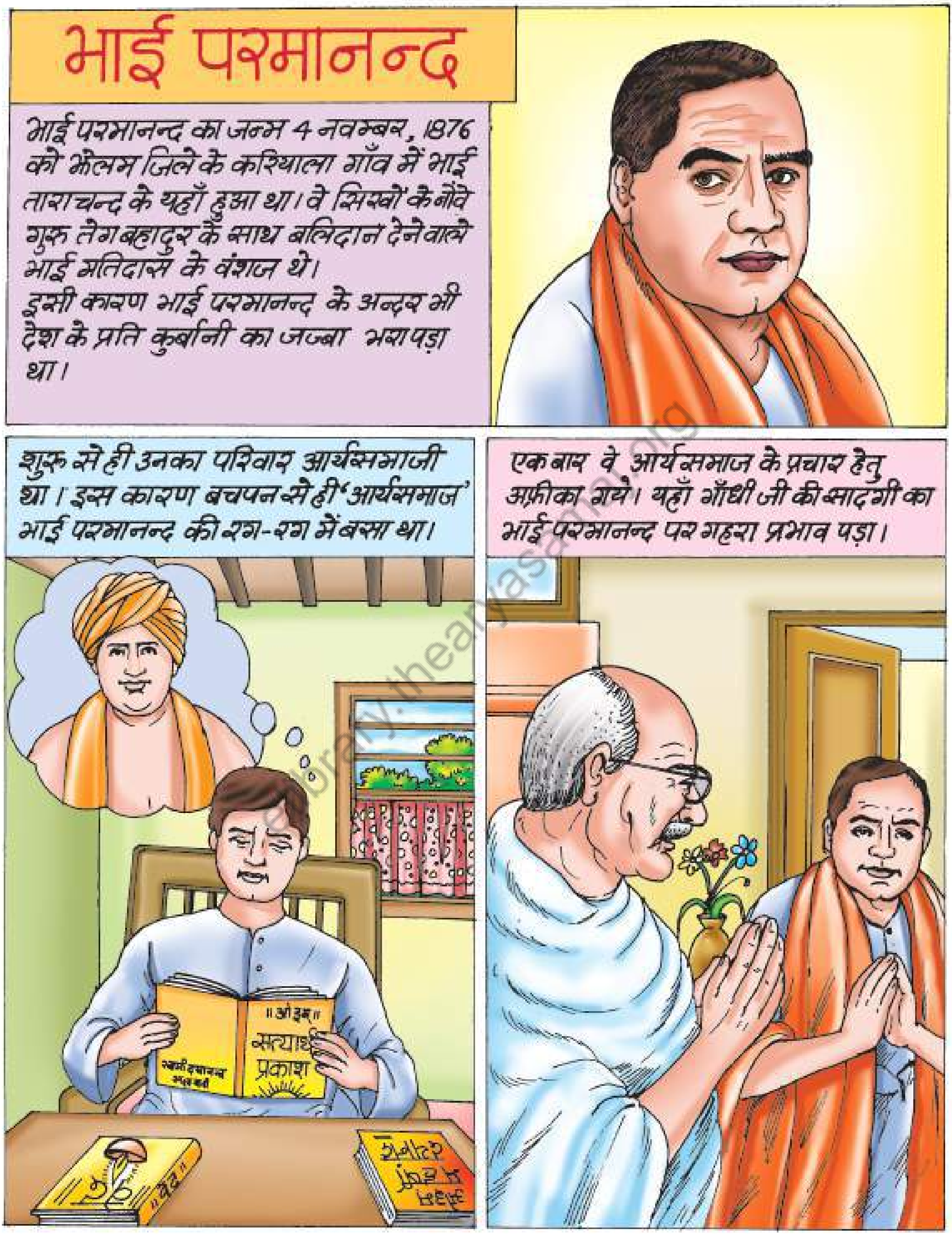
भाई परमानन्द
भाई परमानन्द का जन्म 4 नवम्बर, 1876 को झेलम जिले के करियाला गाँव में भाई ताराचन्द के यहाँ हुआ था। वे सिखों के नौवें गुरु तेग बहादुर के साथ बलिदान देने वाले भाई मतिदास के वंशज थे।
इसी कारण भाई परमानन्द के अन्दर भी देश के प्रति कुर्बानी का जज्बा भरा पड़ा था।
शुरू से ही उनका परिवार आर्यसमाजी था। इस कारण बचपन से ही 'आर्यसमाज' भाई परमानन्द की रग-रग में बसा था।
ओ३म्
सत्यार्थ प्रकाश
स्वामी दयानन्द सरस्वती
एक बार वे आर्यसमाज के प्रचार हेतु अफ्रीका गये। यहाँ गाँधी जी की सादगी का भाई परमानन्द पर गहरा प्रभाव पड़ा।

बाद में वे इंग्लैण्ड पहुँचे। यहाँ उनका सम्पर्क प्रसिद्ध क्रान्तिकारी श्यामजी कृष्ण वर्मा से हुआ।
हमारे जीवन का लक्ष्य भारत को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त कराना है। और अंग्रेजों को भारत से भगाना है।
आप और आपके विचार महान् हैं।
भारत लौटने के बाद उन्होंने अंग्रेजों के काले कारनामों पर 'भारत का इतिहास' नामक एक पुस्तक लिखी जिससे भारतीय क्रान्तिवीरों को बड़ी प्रेरणा मिली।
मुझे विश्वास है कि इस पुस्तक द्वारा अपने क्रान्तिकारी भाइयों को प्रेरणा दे पाऊँगा।
भाई परमानन्द के 'भारत का इतिहास' में लिखे विचारों से अंग्रेज सरकार भयभीत हो गयी। अतः 1910 में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया...
...बाद में उन्हें देश निकाला दे दिया गया।

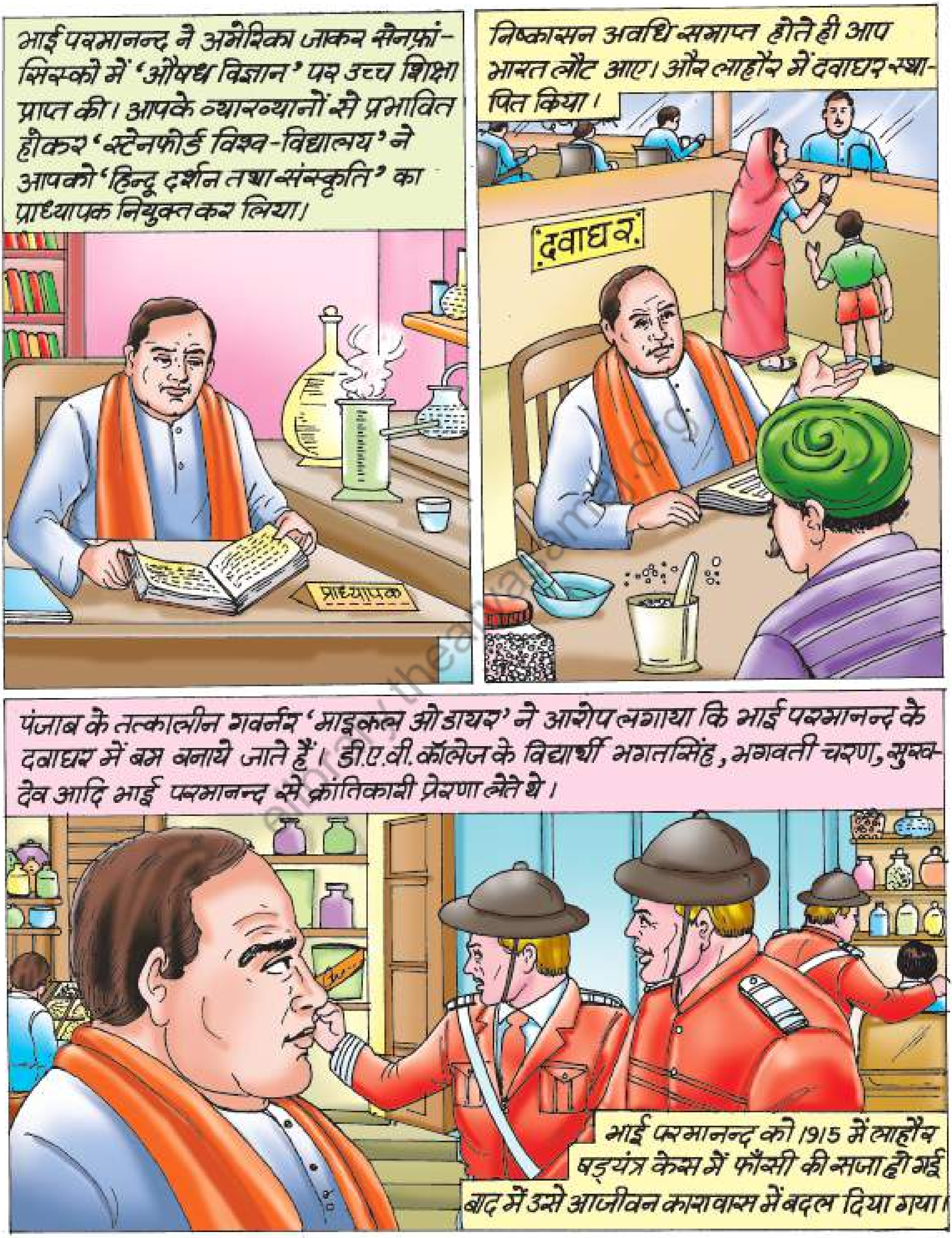
भाई परमानन्द ने अमेरिका जाकर सैनफ्रांसिस्को में 'औषध विज्ञान' पर उच्च शिक्षा प्राप्त की। आपके व्याख्यानों से प्रभावित होकर 'स्टेनफोर्ड विश्व-विद्यालय' ने आपको 'हिन्दू दर्शन तथा संस्कृति' का प्राध्यापक नियुक्त कर लिया।
प्राध्यापक
निष्कासन अवधि समाप्त होते ही आप भारत लौट आए। और लाहौर में दवाघर स्थापित किया।
दवाघर
पंजाब के तत्कालीन गवर्नर 'माइकल ओ डायर' ने आरोप लगाया कि भाई परमानन्द के दवाघर में बम बनाये जाते हैं। डी.ए.वी. कॉलेज के विद्यार्थी भगतसिंह, भगवती चरण, सुखदेव आदि भाई परमानन्द से क्रांतिकारी प्रेरणा लेते थे।
भाई परमानन्द को 1915 में लाहौर षड्यंत्र केस में फाँसी की सजा दी गई बाद में उसे आजीवन कारावास में बदल दिया गया।

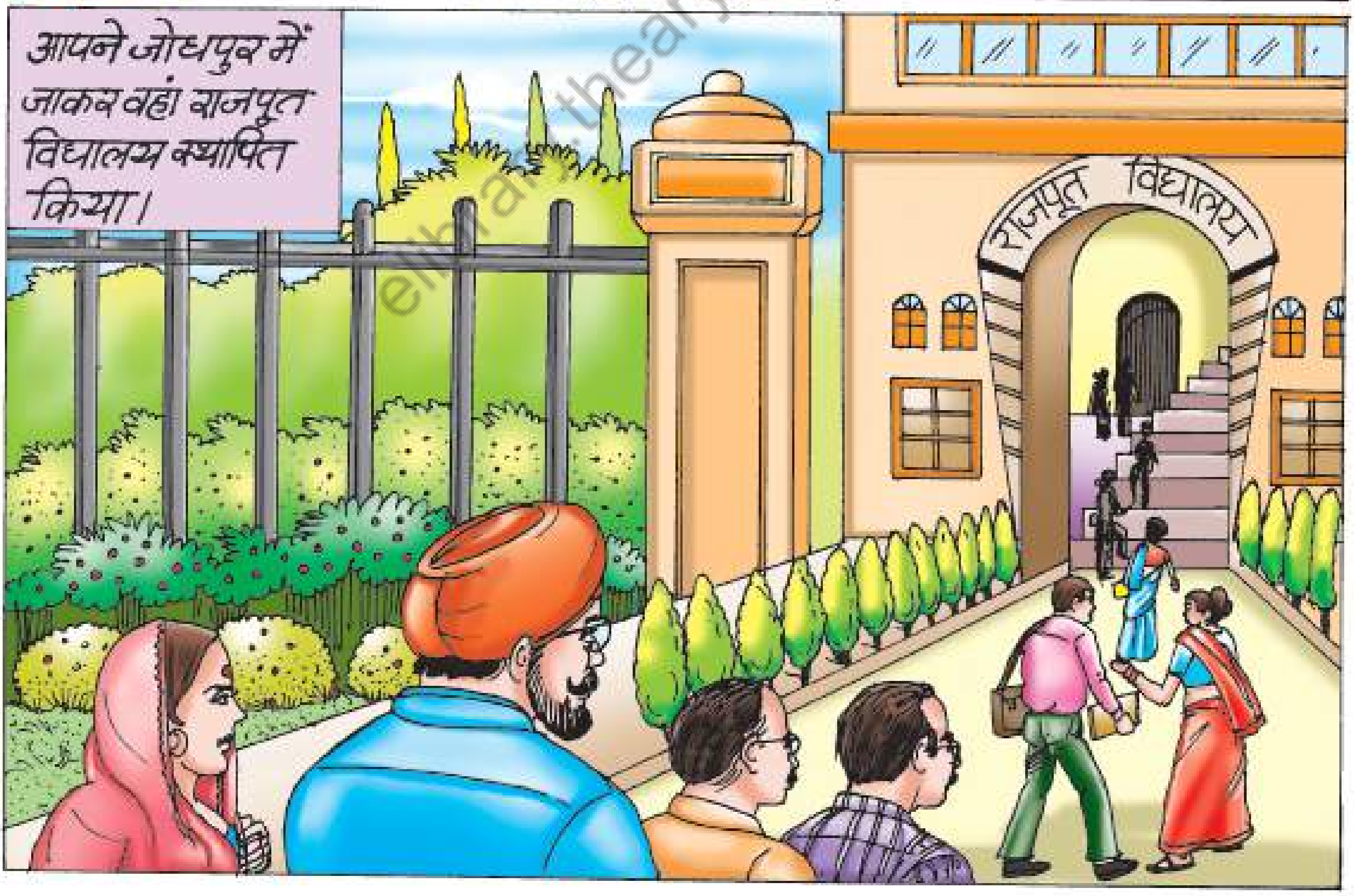

elibrary.thearyasamaj.org

लाला लाजपत राय एवं मालवीय जी के सहयोग से 'हिन्दू महासभा' का गठन किया -
हमें अपने आप पर गर्व होना चाहिए कि हम हिन्दू हैं और हिन्दुस्तान हमारा वतन है।
हिन्दू महासभा गठ
आजादी के बाद देश का बँटवारा होने पर भाई परमानन्द को इतना अधिक कष्ट हुआ कि आजादी के चार महीनें के अन्दर ही 8 दिसम्बर, 1947 को आपने देह त्याग कर दिया।
ओउम

शहीद रामप्रसाद बिस्मिल

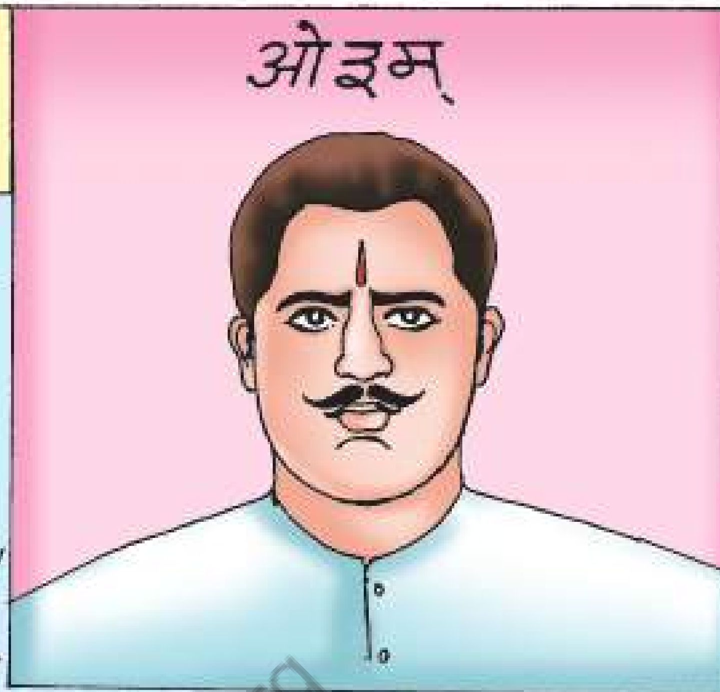

क्रान्तिकारी रामप्रसाद बिस्मिल का जन्म 11 जून, 1897 को मैनपुरी जिले में शाहजहाँ-पुर, उत्तर प्रदेश में हुआ था। आपके पिता जी का नाम श्री मुरलीधर व माताजी का नाम श्रीमती मूलमती देवी था। आपके परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी जिस कारण आपकी पढ़ाई लिखाई ठीक से नहीं हो रही थी। 7 वर्ष की आयु में आपके पिताजी ने आपको हिन्दी अक्षरों का बोध कराया तथा एक मौलवी साहब के 'मकतब' में उर्दू पढ़ने भेज दिया। बचपन में आप बहुत शरारती थे। पाँचवी कक्षा में आप घर से पैसे चुराने, सिगरेट, भांग पीने तथा उपन्यास पढ़ने जैसी बुरी आदतों से ग्रस्त थे। इसी कारण मिडिल की परीक्षा में फेल हो गए।

जब रामप्रसाद बिस्मिल कुछ बड़े हुए तब आर्य-समाज के मुन्शी इन्द्रजीत जी ने उन्हें संध्या करने का उपदेश दिया तथा सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ पढ़ने को दिया जिसे पढ़कर...

...आपका जीवन पूर्णतः बदल गया। सारी बुरी आदतें छूट गईं तथा आप दृढ़ आर्यसमाजी बन गये।

आर्यसमाजी विद्वान् 'स्वामी सोमदेव' को आप गुरु मानते थे। उन्होंने आपको राज-नैतिक उपदेश दिया तथा स्वदेश हित में क्रांतिकारी बनने की प्रेरणा दी।

महान् क्रान्तिकारी भाई परमानन्द को फाँसी की सजा सुना दी गई। इससे कुपित होकर उन्होंने भारत माता को गुलामी से मुक्ति दिलाने का बीड़ा उठाया।

ओ३म्
आर्य कुम्भ महायज्ञ
'शास्त्रार्थ'
रामप्रसाद बिस्मिल निष्ठावान् आर्यसमाजी थे। उन्होंने आर्यकुम्भ सभा बनाकर युवकों को वैदिक धर्म से जोड़ा। यहाँ तक कि उन्होंने वैदिक धर्म की सच्चाई सिद्ध करने के लिए आर्य विद्वानों को बुलाकर एक शास्त्रार्थ भी करवाया।
रामप्रसाद के पिता को उनका आर्यसमाजी होना अच्छा नहीं लगा। उन्होंने पुत्र से कहा कि-
रामप्रसाद! तू या तो आर्यसमाज छोड़ दे या घर छोड़ दे।
धर्म धुन का धनी रामप्रसाद घर छोड़ कर चला गया लेकिन आर्यसमाज न छोड़ा। कई दिन बाद उनके पिताजी ही उन्हें घर लौटा कर लाए।
जेल में रहकर भी रामप्रसाद बिस्मिल नियमित रूप से संध्या, ईश्वर का ध्यान व यज्ञ करते थे। कालकोठरी में भी उनके इस व्यवहार का जेल कर्मचारियों पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि वे इन्हें गुरुजी कहते थे। जिस यज्ञकुण्ड में वे यज्ञ करते थे, वह आज भी हमारी ऐतिहासिक व सांस्कृतिक धरोहर है।
?
ओ३म्

रामप्रसाद बिस्मिल ने 'हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन' संस्था के माध्यम से क्रांतिकारी गतिविधियाँ आरम्भ की ।
हिन्दुस्तान रिप लिकन
एसोसिए
बिस्मिल अच्छे लेखक थे उन्होंने अमेरिका को स्वतंत्रता कैसे मिली ?, मैनपुरी षड्यंत्र केस के नेता पं. गेंदालाल दीक्षित, सूफी अम्बा प्रसाद, देशमान्य बाबू मोतीलाल घोष, मन की लहर, स्वदेशी रंग, क्रांतिकारी जीवन तथा आत्म-चरित्र जैसी पुस्तकें लिखीं। इनमें से अधिकतर ब्रिटिश सरकार द्वारा जब्त कर ली गई।
अमेरिका को स्वतंत्रता कैसे मिली
मैनपुरी षड्यंत्र केस के नेता पं. गेंदालाल दीक्षित
सूफी अम्बा प्रसाद
देशमान्य बाबू मोतीलाल घोष
मन की लहर
स्वदेशी रंग
कांतिकारी जीवन
आत्म चरित्र
सत्यार्थ प्रकाश

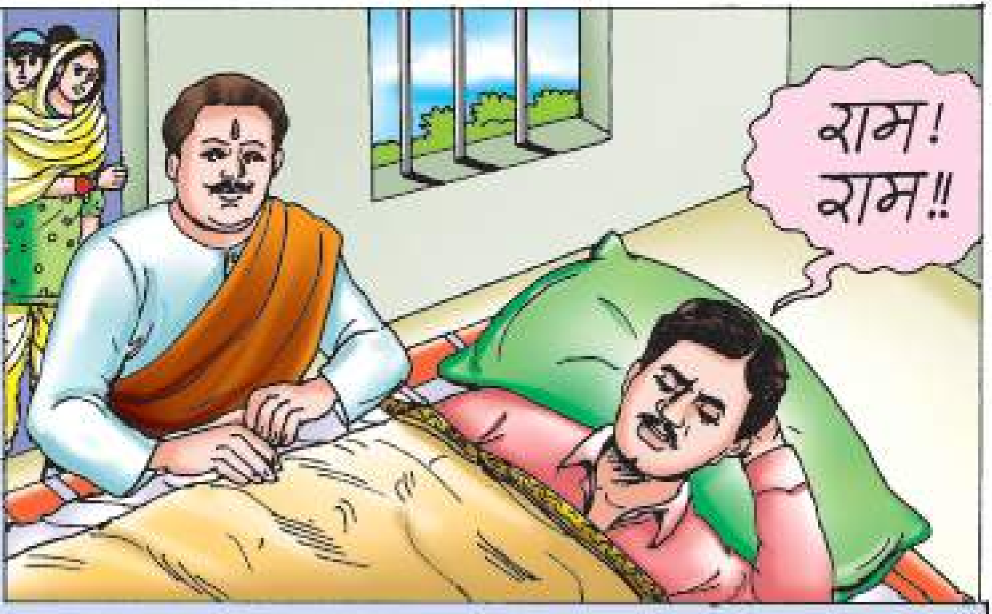

रामप्रसाद बिस्मिल व अशफ़ाक उल्ला खां के परस्पर अत्यन्त प्रेम पूर्ण सम्बन्ध थे। अशफ़ाक उन्हें भाई साहब नहीं बल्कि 'राम' कहकर पुकारते थे। क्योंकि वे अशफ़ाक के बड़े भाई के साथ पढ़ते थे। एक बार अशफ़ाक बीमार पड़ गये, उन्हें तेज बुखार था। वह बुखार के कारण बार-बार राम! राम! कह कर पुकारने लगे। परिवार के सदस्य यह शब्द सुनकर भौचक्के व हैरान रह गये कि ये अल्लाह-अल्लाह बोलने की जगह राम-राम क्यों बोल रहे हैं। फिर उनके पड़ोसी हिन्दुओं ने उनके घर वालों को बताया कि वे बेहोशी के हालत में राम-राम कहकर अपने दोस्त 'रामप्रसाद बिस्मिल को पुकार रहे हैं'। बिस्मिल को बुलाया गया। बिस्मिल ने आकर अशफ़ाक को पुकारा। अशफ़ाक की आँखें खुल गई। अपने मित्र को देखकर वे भाव विभोर हो गये। तब परिवारजन राम-राम के भेद को समझे।

अंग्रेज सरकार क्रांतिकारियों के पीछे पड़ गई, एक साथी की गद्दारी के कारण रामप्रसाद बिस्मिल को अन्य साथियों सहित गिरफ्तार कर लिया गया। इस काकोरी षड्यंत्र केस में चार क्रांतिवीरों को फाँसी की सजा घोषित हुई। राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी को 17 दिसम्बर एवं रामप्रसाद बिस्मिल, ठाकुर रोशन सिंह एवं अशफाकउल्ला खाँ को 19 दिसम्बर, 1927 को फाँसी पर लटकाया गया।

रामप्रसाद बिस्मिल बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वे शायर भी थे। उनके "सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है" गीत ने क्रांतिवीरों में एक नया उत्साह एवं देश के लिए मर मिटने का संकल्प पैदा कर दिया।

elibrary.thearyasamaj.org

क्रांतिकारी गतिविधियों के लिए धन चाहिए था। अतः क्रांतिकारियों ने निश्चय किया कि 'काकोरी रेलवे स्टेशन' के निकट रेलगाड़ी से सरकारी ख़जाने को लूटकर दल की गतिविधियां तेज की जायें। सभी साथियों ने रामप्रसाद बिस्मिल के नेतृत्व में मिलकर कार्य करने की शपथ ली। 9 अगस्त, 1925 को काकोरी से लखनऊ को जाने वाली डाऊन पैसेंजर ट्रेन को दिन-दहाड़े रोक लिया गया। ट्रेन के रुकते ही क्रान्तिकारी वीरों ने चिल्लाकर कहा-

बिस्मिल की वसीयत—

'रामप्रसाद बिस्मिल' उन्होंने मौत के साये में अपनी आत्मकथा लिखी तथा फाँसी के फन्दे पर झूल गए ताकि उनके देशवासी सुख के हिंडोले में झूल सकें। उन्होंने अपनी सम्पूर्ण जवानी की आहुति अंग्रेजी सरकार से टक्कर लेने में दे दी ताकि हम स्वराज्य का सुख भोग सकें। उन्होंने अनगिनत दिन भूखे-प्यासे रहकर काटे ताकि उनके देशवासी कभी भूखे न सोएं।

तो क्या यह हमारा परम कर्त्तव्य नहीं है कि हम स्वयं उनकी आत्मकथा पढ़ें और भावी पीढ़ी को भी पढ़ाएँ। उनके विचारों का प्रचार करें।

मरते 'बिस्मिल', 'रोशन', 'लहरी', अशफ़ाक अत्याचार से।
होंगे पैदा सैंकड़ों, इनकी रुधिर की धार से॥

ठाकुर रोशनसिंह

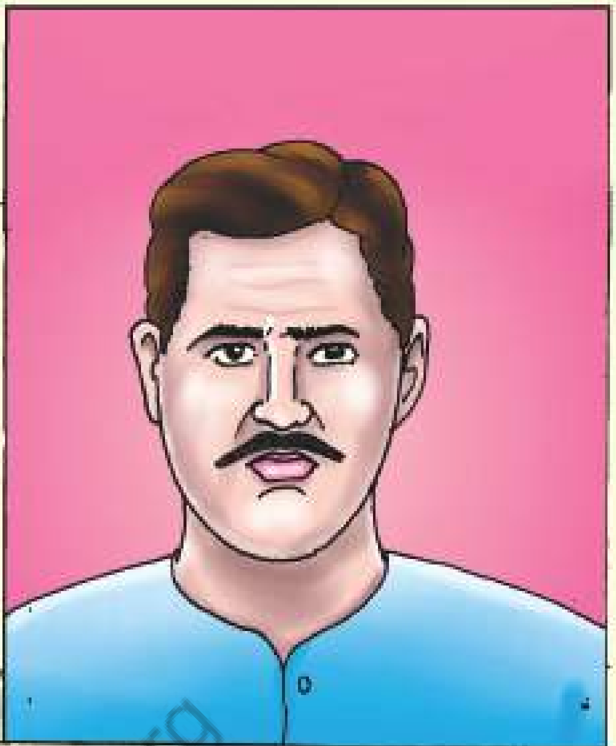

रोशन सिंह का जन्म सन् 1891 में शाहँपुरा जिले के नावादा गाँव में एक राजपूत परिवार में हुआ था। रोशनसिंह भी आर्य समाज से प्रभावित थे। ब्रिटिश सरकार ने बरेली कांड में इन्हें झूठा फंसा दिया और इन्हें दो वर्ष की कठोर कारावास की सजा दे डाली। कारावास की सजा दे डाली। कारावास ने ही वीर रोशनसिंह के अन्दर छिपे, क्रान्किारी को रोशन कर दिया। 1923 में जेल से मुक्त होते ही यह रामप्रसाद बिस्मिल, शचिन्द सान्याल एवं असफाकउल्ला खां आदि क्रान्तिकारी वीरों के दल में शामिल हो गए। 9 अगस्त, 1925 को 'काकोरी कांड' खजाना लूटने में यह भी शामिल थे। इस ट्रेन में डकैती में शामिल सभी क्रान्तिकारियों को गिरफ्तार कर लिया गया। इनमें रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाकउल्ला खां, राजेन्द्र लाहड़ी व ठाकुर रोशन सिंह को फाँसी की सजा सुना दी गई। आर्य समाजी होने के कारण 19 दिसम्बर, 1927 के दिन फाँसी के तख्तें पर फंदा लगने से पहले ठाकुर रोशन सिंह ने पहले लम्बें स्वर में 'ओ...म्' का उच्चारण किया था। उनका अन्त्येष्टि संस्कार भी आर्यसमाज की विधि से हुआ था। 'वीर रोशन सिंह शायर भी थे, फाँसी के छः दिन पहले उन्होंने अपने एक मित्र को पत्र में लिखा था—''जिन्दगी ज़िन्दादिली को जान ए रोशन, वरना कितने मरे और पैदा होते जाते हैं।''

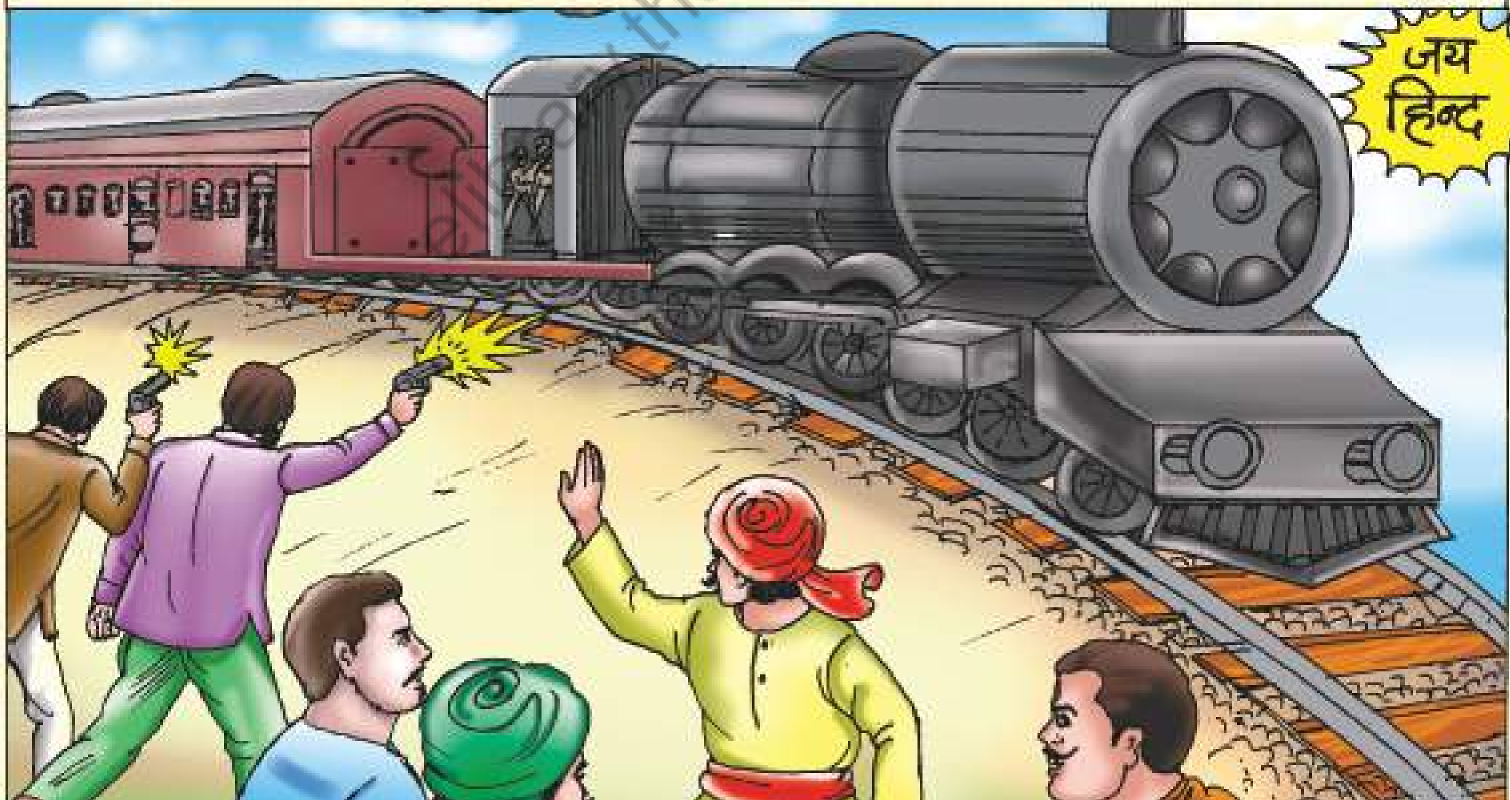

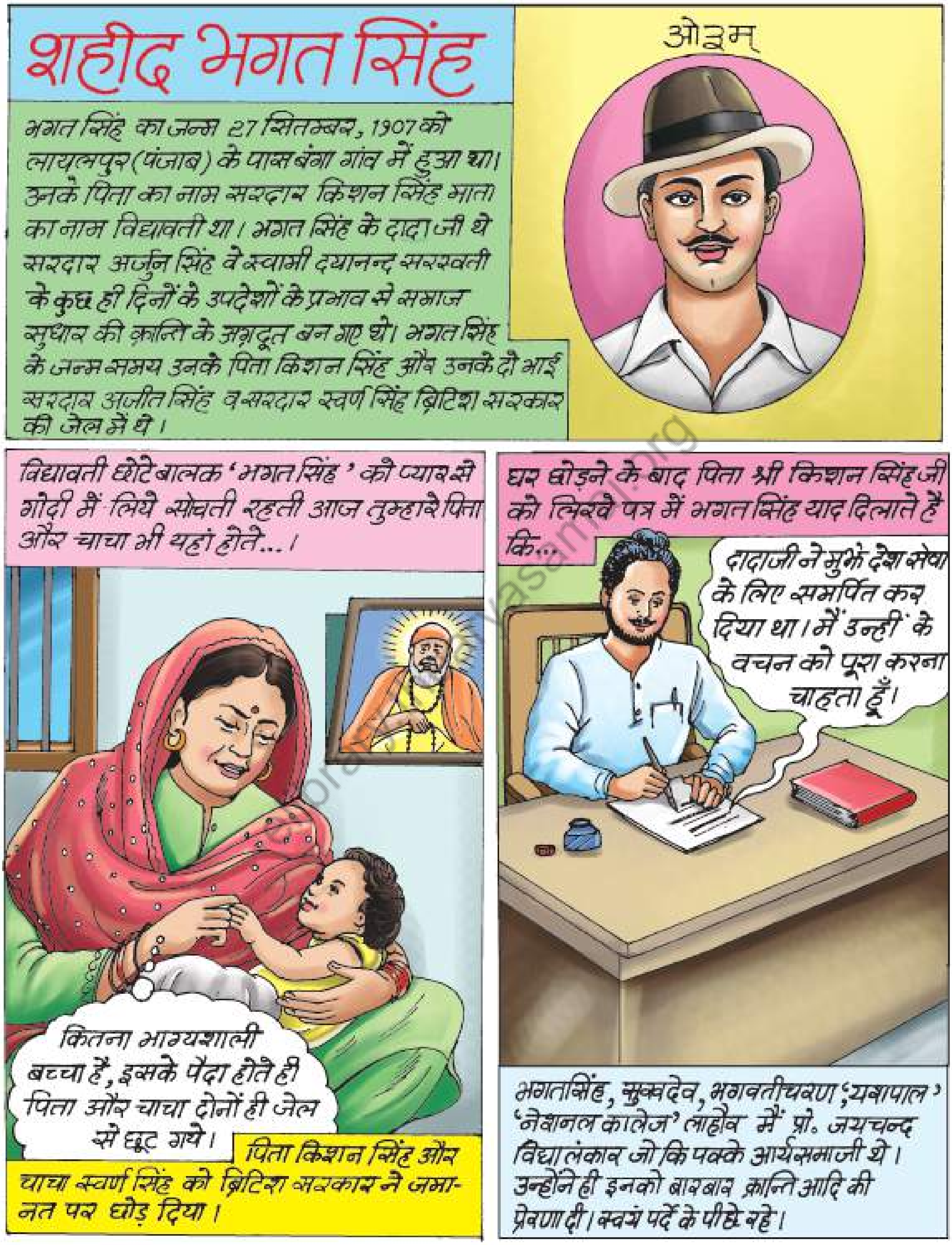
शहीद भगत सिंह
ओ३म्
भगत सिंह का जन्म 27 सितम्बर, 1907 को लायलपुर (पंजाब) के पास बंगा गांव में हुआ था। उनके पिता का नाम सरदार किशन सिंह माता का नाम विद्यावती था। भगत सिंह के दादा जी थे सरदार अर्जुन सिंह वे स्वामी दयानन्द सरस्वती के कुछ ही दिनों के उपदेशों के प्रभाव से समाज सुधार की क्रान्ति के अग्रदूत बन गए थे। भगत सिंह के जन्म समय उनके पिता किशन सिंह और उनके दो भाई सरदार अजीत सिंह व सरदार स्वर्ण सिंह ब्रिटिश सरकार की जेल में थे।
विद्यावती छोटे बालक 'भगत सिंह' को प्यार से गोदी में लिये सोचती रहती आज तुम्हारे पिता और चाचा भी यहां होते...।
कितना भाग्यशाली बच्चा है, इसके पैदा होते ही पिता और चाचा दोनों ही जेल से छूट गये।
पिता किशन सिंह और चाचा स्वर्ण सिंह को ब्रिटिश सरकार ने जमानत पर छोड़ दिया।
घर छोड़ने के बाद पिता श्री किशन सिंह जी को लिखे पत्र में भगत सिंह याद दिलाते हैं कि...
दादाजी ने मुझे देश सेवा के लिए समर्पित कर दिया था। मैं उन्हीं के वचन को पूरा करना चाहता हूँ।
भगतसिंह, सुखदेव, भगवतीचरण 'यशपाल' 'नेशनल कालेज' लाहौर में प्रो॰ जयचन्द विद्यालंकार जो कि पक्के आर्यसमाजी थे। उन्होंने ही इनको बारबार क्रान्ति आदि की प्रेरणा दी। स्वयं पर्दे के पीछे रहे।

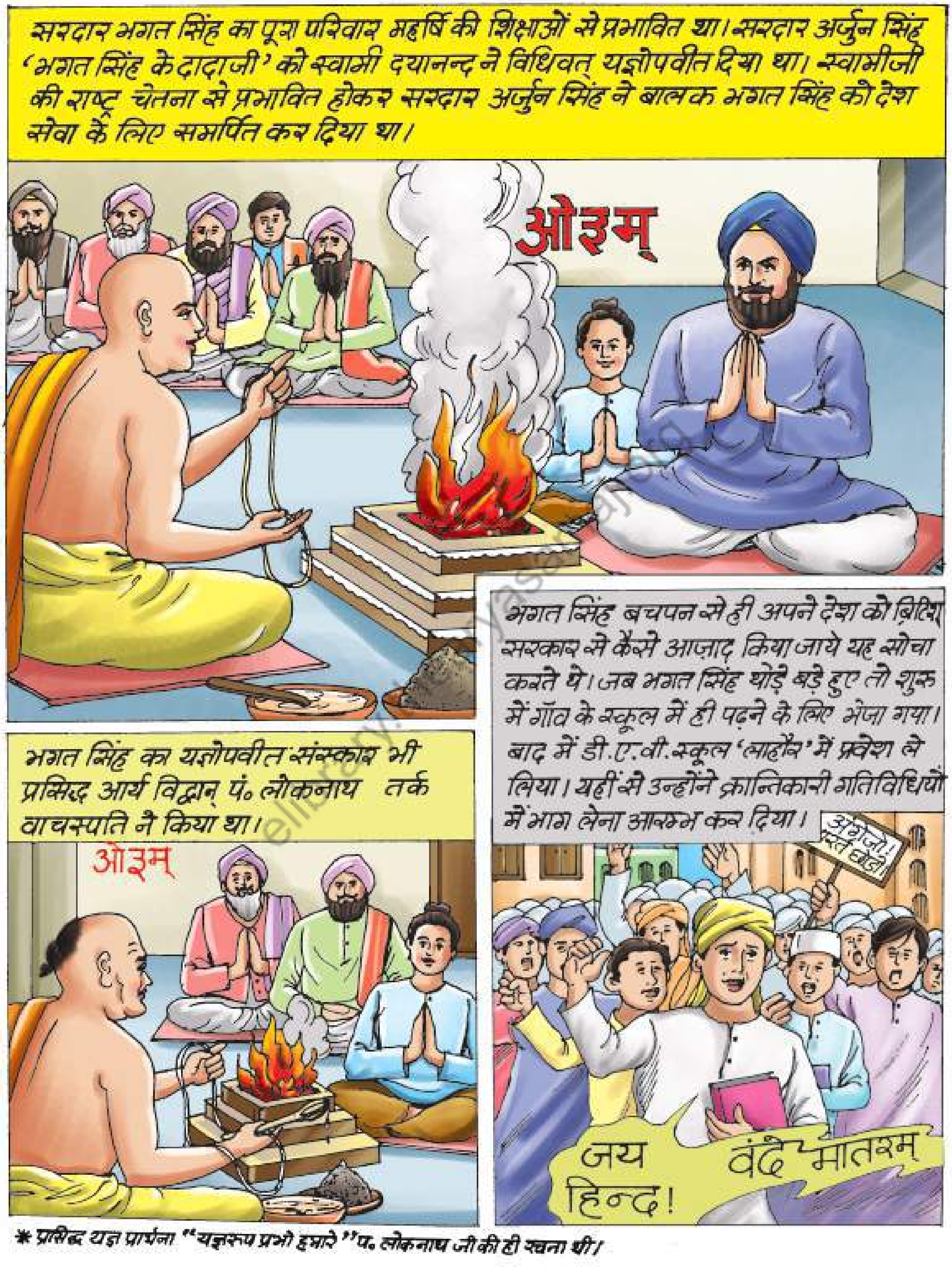

* प्रसिद्ध यज्ञ प्रार्थना "यज्ञरूप प्रभो हमारे" पं० लोकनाथ जी की ही रचना थी।

साइमन कमीशन के विरोध जुलूस पर लाठी चार्ज से लाला लाजपत राय का निधन हो गया।
तड़ाक
15 दिसम्बर 1918 को भगत सिंह और राजगुरु ने लाठी चार्ज के जिम्मेदार जे. पी.— साण्डर्स एस. पी की हत्या कर दी।
धांय
हत्या करने के बाद भगत सिंह और राजगुरु वहां से साइकिल द्वारा भाग निकले।
भागो!
ब्रिटिश सरकार ने पूरे लाहौर शहर में नाके-बंदी लगा दी और हर जगह पुलिस फैला दी। भगत सिंह पुलिस को चकमा देने के लिए वेश बदल कर अपने मित्र की पत्नी...
...दुर्गा भाभी की मदद से लाहौर शहर से बाहर निकलने में कामयाब हो गये।

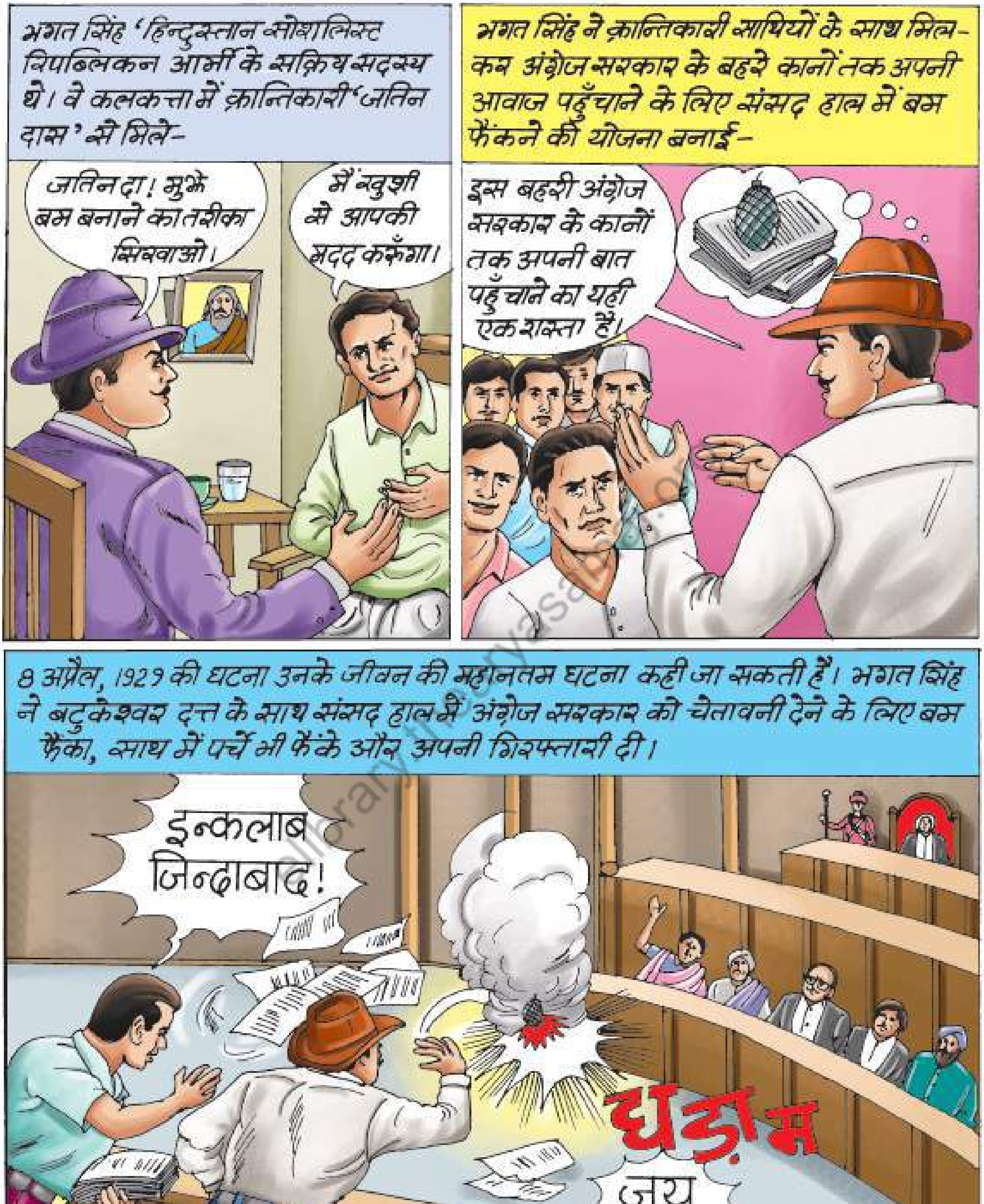
भगत सिंह 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी के सक्रिय सदस्य थे। वे कलकत्ता में क्रान्तिकारी 'जतिन दास' से मिले–
जतिन दा! मुझे बम बनाने का तरीका सिखाओ।
मैं खुशी से आपकी मदद करूँगा।
भगत सिंह ने क्रान्तिकारी साथियों के साथ मिल-कर अंग्रेज सरकार के बहरे कानों तक अपनी आवाज पहुँचाने के लिए संसद हाल में बम फैंकने की योजना बनाई–
इस बहरी अंग्रेज सरकार के कानों तक अपनी बात पहुँचाने का यही एक रास्ता है।
8 अप्रैल, 1929 की घटना उनके जीवन की महानतम घटना कही जा सकती है। भगत सिंह ने बटुकेश्वर दत्त के साथ संसद हाल में अंग्रेज सरकार को चेतावनी देने के लिए बम फैंका, साथ में पर्चे भी फैंके और अपनी गिरफ्तारी दी।
इन्कलाब जिन्दाबाद!
धड़ाम
जय हिन्द!

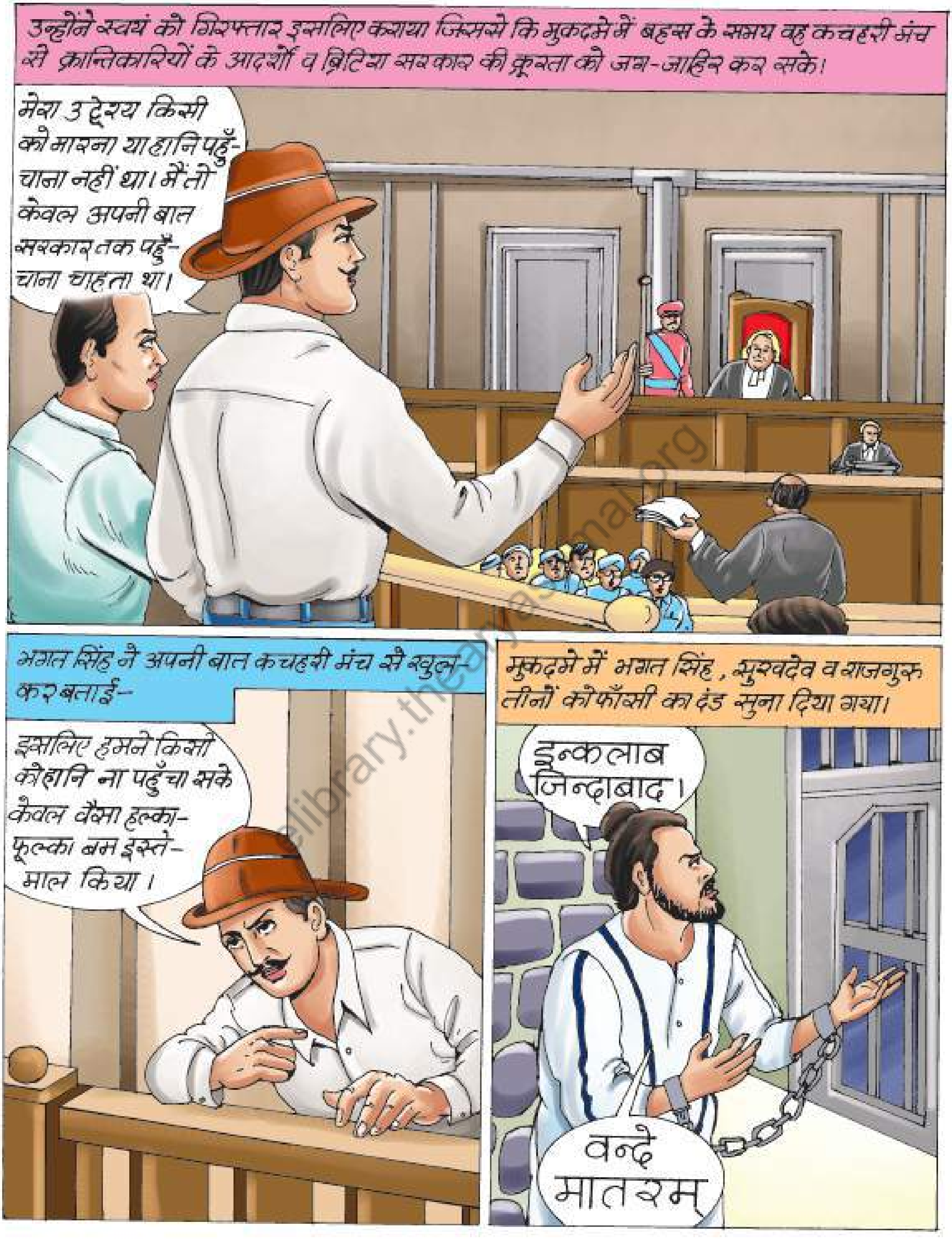
उन्होंने स्वयं को गिरफ्तार इसलिए कराया जिससे कि मुकदमे में बहस के समय वह कचहरी मंच से क्रान्तिकारियों के आदर्शों व ब्रिटिश सरकार की क्रूरता को जग-जाहिर कर सके।
मेरा उद्देश्य किसी को मारना या हानि पहुँचाना नहीं था। मैं तो केवल अपनी बात सरकार तक पहुँचाना चाहता था।
भगत सिंह ने अपनी बात कचहरी मंच से खुलकर बताई--
इसलिए हमने किसी को हानि ना पहुँचा सके केवल वैसा हल्का-फुल्का बम इस्तेमाल किया।
मुकदमे में भगत सिंह, सुखदेव व राजगुरु तीनों को फाँसी का दंड सुना दिया गया।
इन्कलाब जिन्दाबाद।
वन्दे मातरम्

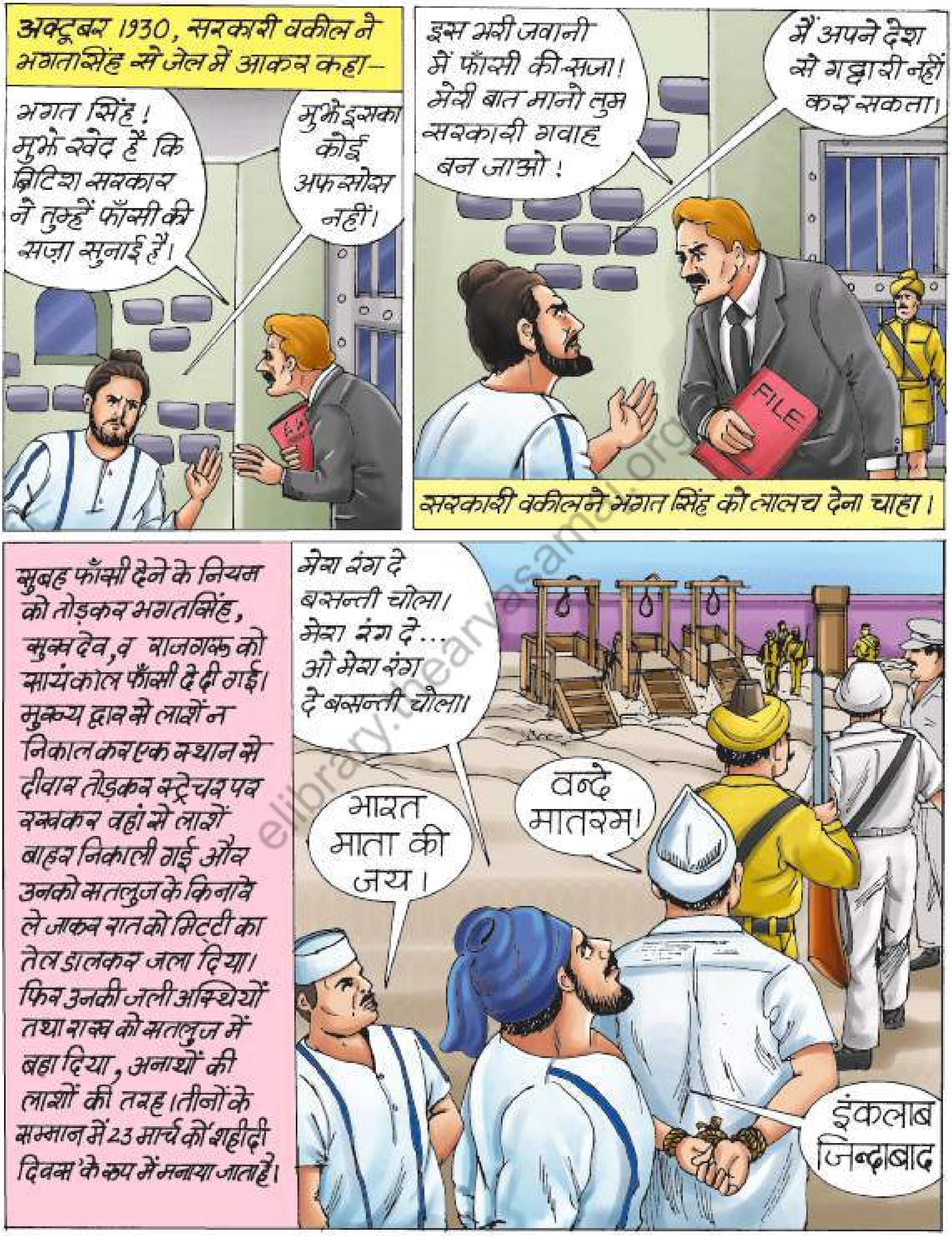

elibrary.thearyasamaj.org

क्रान्तिकारी सुखदेव

सुखदेव का जन्म लायलपुर पंजाब में 15 मई 1907 में हुआ था। जन्म होने से तीन मास पहले ही पिता जी संसार से चल बसे। आपका पालन–पोषण चाचा अचिन्तराम ने किया। आपका परिवार आर्यसमाजी था। उसके कारण आपको आर्य समाज के प्रति श्रद्धा थी। उसी से आपको देशभक्ति के संस्कार मिले। आप आर्यसमाज के सत्संग में अवश्य जाते थे हवन संध्या और योगाभ्यास में भी आपकी रुचि थी। जब सुखदेव 16 वर्ष के थे तब माँ द्वारा विवाह की बात करने पर सुखदेव ने कह दिया कि 'माता ! मैं शादी की घोड़ी पर नहीं, क्रान्ति की घोड़ी पर चढूंगा।' 'नेशनल कालेज, लाहौर' में प्रवेश लेने के बाद इनको भगतसिंह, यशपाल जैसे क्रान्तिकारी साथी मिल गये। वहां इनके मन में क्रान्ति की भावना सुदृढ़ हो गई। प्रो. जयचन्द विद्यालंकार की प्रेरणाओं ने उस भावना को और मजबूत कर दिया।

साइमन कमीशन के आगमन पर विरोध की योजना बनाने के अपराध में आपको गिरफ्तार किया गया किन्तु एक दिन बाद ही छोड़ दिया। साण्डर्स हत्याकाण्ड या 'लाहौर षड़यन्त्र' में 15 अप्रैल, 1919 को श्री किशोरी और प्रेमनाथ के साथ आपको गिरफ्तार कर लिया। चौबीस वर्ष की आयु में 23 मार्च, 1931 को भगतसिंह व राजगुरु के साथ आपको भी सायंकाल फांसी पर लटका दिया गया। तथा रात को ही शवों को जेल से चुपचाप निकालकर सतलुज के किनारे लेजाकर मिट्टी का तेल डालकर जला दिया और लावारिशों की तरह अस्थियों को प्रवाहित कर दिया।

elibrary.aryasamaj.org

भाई बालमुकुन्द गुप्त

भाई बालमुकुन्द गुप्त का जन्म सन् 1885 में अमर बलिदानी भाई मतिदास के वंश में पंजाब के चकवाल गाँव में हुआ था। देश और धर्म पर बलिदान होने कि भावना भाई बालमुकुन्द को अपने पूर्वजों से विरासत में मिली थी। उन्होंने लाहौर से शिक्षा-स्नातक की परीक्षा में उच्च स्थान प्राप्त किया। वह लाहौर से अवधबिहारी के साथ कॉलेज में शिक्षक नियुक्त हो गये। आर्यसमाजी परिवार होने के कारण वे भी आर्य समाजी व आर्य समाज से प्रभावित थे।

भाई बालमुकुन्द महान, स्वाधीनता सेनानी, इतिहासकार व आर्यसमाजी मनीषी भाई परमानन्द के चचेरे भाई थे। भाई परमानन्द ने लाहौर में पहले ही युवकों में भारतीय स्वतंत्रा का मंत्र फूँकने का अभियान छेड़ा हुआ था। दिनांक 23 दिसंबर, 1912 का दिल्ली में बसंतकुमार विश्वास ने वायसराय लार्डहार्डिंग पर बम फेंका था और वहाँ जो अन्य दो व्यक्ति बुर्का पहने स्त्री वेष में वंसतकुमार के साथ थे वे भाई बालमुकुन्द एवं अवधबिहारी ही थे। फरवरी, 1914 में इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। दिनांक 8 मई, 1915 को मास्टर अमीचन्द अवध-बिहारी के साथ भाई बालमुकुन्द को भी दिल्ली में फाँसी पर लटका दिया गया।

मास्टर अमीचन्द   अवध-बिहारी   भाई बालमुकुन्द

भाई बालमुकुन्द की फाँसी के बाद उनकी धर्म पत्नी रामरक्खी ने एकान्त वास लेकर खाना-पीना छोड़ दिया एवं ध्यान में लीन होकर होठों से केवल 'वन्दे-मातरम्' का जाप करते हुए अट्ठाईस दिन बाद प्राण त्याग दिये।

भाई बालमुकुन्द ने लाला लाजपतराय के साथ मिल कर अनेक वर्ष अछूतोद्धार व समाज सेवा के कार्य किये। फिर क्रान्तिकारी बने।

पंडित गेंदालाल दीक्षित

पडित गेंदालाल दीक्षित का जन्म आगरा जिले के मई गाँव में 30 नवम्बर, 1890 को हुआ था। पड़ित गेंदालाल ने देश की आज़ादी के लिए निश्चय किया कि बिटिश सरकार से सशस्त्र संघर्ष करना होगा। अतः इन्होंने पहले 'शिवाजी समिति' और बाद में 'मातृवेदी' संस्थाओं का गठन किया। पडित गेंदालाल आर्य – समाजी थे। उन्होंने चम्बल के डाकुओं से सम्पर्क कर उन्हें डकैती की धारा से मोड़कर देश की आजादी की खातिर शस्त्र उठाने के लिए तैयार किया।

गेंदालाल दीक्षित ने बिटिश सरकार के विरुद्ध टक्कर लेने की योजना बना रहे थे। तभी किसी मुखबिर ने पुलिस को सूचना दे दी। पुलिस से भारी टक्कर में इनके 35 क्रातिवीर वीरगति को प्राप्त हो गये, और 45 गिरफ्तार कर लिये गये। रामप्रसाद बिस्मिल ने इन्हें जेल से छुड़ाने की योजना बनाई। पर पुलिस को इस योजना का पता चल गया। अतः इन्हें ग्वालियर से मैनपुरी जेल भेज दिया गया यहाँ.......

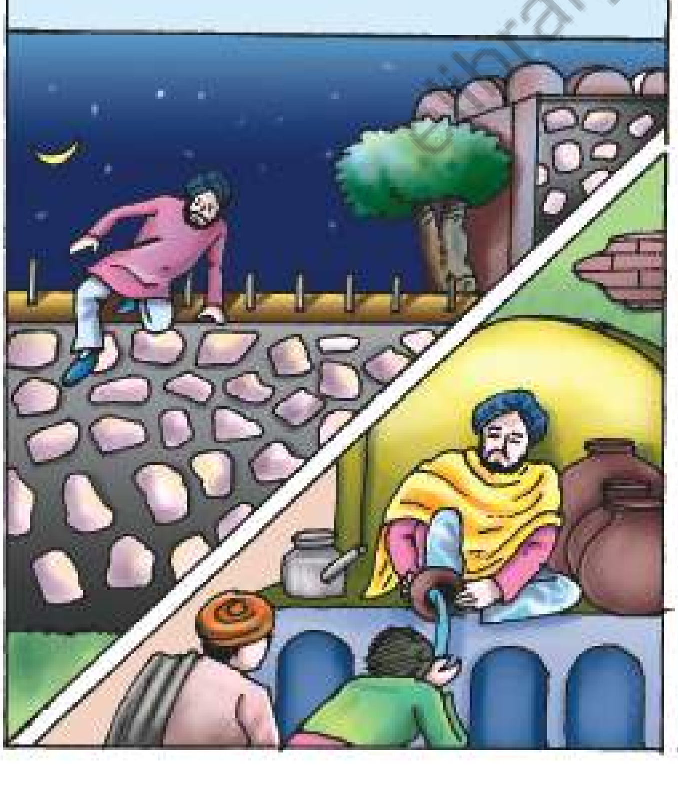

.... के गंदे वातावरण के कारण उन्हें टी. बी. हो गई एक दिन दीवार फाँद कर वह जेल से भाग निकले। भाग कर कोटा आ गये। यहाँ इनके मित्र रामनारायण ने इन्हें धोखा दिया। रात को धर्मशाला के एक कमरे से इनका सारा माल लेकर चम्पत हो गया और गेंदालाल दीक्षित को कमरे में बन्द कर कमरे के बाहर ताला डाल गया। तीन दिन बाद कमरे से बाहर आ सके। बीमारी की हालत में घर पहुँचे तो इनके पिता व घरवालों ने पुलिस के डर से उन्हें घर में रखने से मना कर दिया। बीमारी की हालत में पुलिस को चकमा देते हुए दिल्ली आकर एक प्याऊ पर पानी पिलाने का काम करने लगे। लेकिन बीमारी के कारण इनकी दशा बिगड़ गई। अंति समय पर इनकी पत्नी व मित्र दिल्ली आ गये।

elibrary.thearyasamaj.org

क्रान्तिकारी यशपाल

यशपाल का जन्म 3 दिसम्बर, सन् 1903 को 'फिरोजपुर छावनी' (पंजाब) में हुआ था। मूलरूप से उनके पूर्वज कांगड़ा (हिमाचल) निवासी थे। यशपाल के माता–पिता दृढ़ आर्यसमाजी थे। माताजी की इच्छा थी कि मेरा बेटा आर्य–उपदेशक बने और ऋषि दयानन्द की वैदिक विचारधारा को विश्व में फैलाये। इस भावना से माता–पिता ने यशपाल को शिक्षा प्राप्ति के लिए गुरूकुल कांगड़ी (हरिद्वार) में प्रवेश दिला दिया। यहाँ यशपाल के मन में देश प्रेम की भावना पनप गई। स्कूली शिक्षा के बाद यशपाल ने 'नैशनल कालेज, लाहौर' में प्रवेश ले लिया।

वहां इनको भगत सिंह और सुखदेव जैसे राष्ट्रप्रेमी साथी मिले। प्रोफेसर जयचन्द विद्यालंकार ने इन युवकों की भावना को सदृढ़ बनाया।

सन् 1921 में यशपाल क्रान्तिकारी बन गये और सशस्त्र क्रान्ति की घटनाओं में भाग लेने लगे। सन् 1929 ई0 में हुई वायसराय की गाड़ी के नीचे बम विस्फोट वाली घटना में यशपाल भी शामिल थे। चन्द्रशेखर आजाद के शहीद होने के बाद ये उनके स्थान पर हिन्दुस्तानी समाजवादी प्रजातन्त्र पार्टी के कमाण्डर बने। 'दिल्ली बम काण्ड' और 'लाहौर षड्यंत्र में यशपाल को भी मुख्य अभियुक्त बनाया गया किन्तु ये फरार रहे। पुलिस के हाथ नहीं लगे। 1932 में इनकी पुलिस से मुठभेड़ हो गई। दोनों तरफ से गोलियां चली और ये पकड़े गये। इनको चौदह साल की सख्त सजा हुई। 1938 में उत्तर प्रदेश में कांग्रेस मन्त्रिमण्डल बनने पर उनको जेल से मुक्ति मिली। किन्तु 1941 में फिर गिरफ्तार कर लिया गया। यशपाल हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध कहानीकार, उपन्यासकार और क्रान्ति साहित्य के लेखक थे। उनके द्वारा लिखी दो दर्जन के लगभग पुस्तकें हैं जिनमें क्रान्ति के संस्मरण 'सिंहावलोकन' बहुत प्रसिद्ध है। काफी साहित्य तो जेल में ही लिखा था। इनके साहित्य पर भारत सरकार ने 'पद्मभूषण' पुरस्कार तथा सोवियत रूस सरकार ने 'सोवियत–नेहरू पुरस्कार' दिया। सन् 1976 में आपका स्वर्गवास हो गया।

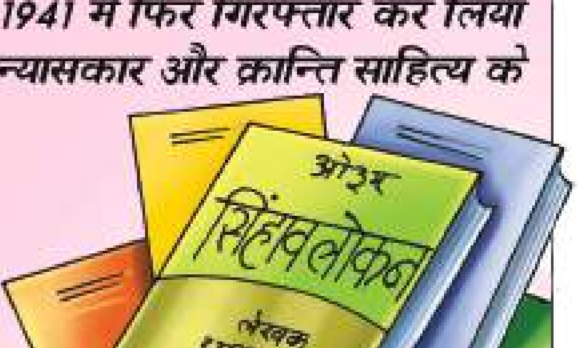

शहीदों की चिताओं पर, लगेंगे हर बरस मेले।
वतन पर मिटने वालों का, यही बाकी निशां होगा।।

हमारे अन्य प्रेरक कॉमिक्स